कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN : 2583-4991

● भोपाल मंगलवार 01 से 07 अप्रैल 2025 ● वर्ष-25 ● अंक-45 ● पृष्ठ-16 ● मूल्य-13 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26

किसानों को 1350 रुपये में मिलेगी डीएपी की बोरी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने फॉस्फेटिक और पोटासिक (पीएंडके) उर्वरकों पर खरीफ सीजन 2025 (1 अप्रैल 2025 से 30 सितंबर 2025) के लिए पोषक तत्व आधारित सब्सिडी दरें तय करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। सरकार द्वारा इस योजना के तहत 37,216.15 करोड़ रुपये की बजटीय राशि निर्धारित की गई है, जो रबी सीजन 2024-25 के लिए तय बजट से करीब 13,000 करोड़ रुपये अधिक है।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस फैसले पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि मोदी सरकार किसानों की आय बढ़ाने के लिए लगातार प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि किसानों को उर्वरक की बढ़ती कीमतों से राहत देने के लिए सरकार भारी सब्सिडी प्रदान कर रही है। डीएपी खाद की कीमत नियंत्रित करने के लिए सरकार ने प्रति बोरी 1,350 रुपये तय किए हैं, ताकि किसानों को अधिक कीमत न चुकानी पड़े। उन्होंने बताया कि इस वर्ष सरकार ने उर्वरकों पर लगभग 1.75 लाख करोड़ रुपये की सब्सिडी दी है, जिससे किसानों को सस्ते दामों पर खाद उपलब्ध कराई जा सके।

इसके अलावा केंद्र सरकार ने चना उत्पादकों के हित में बड़ा फैसला लेते हुए चने के आयात पर 10 प्रतिशत शुल्क लगाने की अधिसूचना जारी की है। इस निर्णय से सस्ते दामों पर विदेश से आने वाले चने पर रोक लगेगी और देश के किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य मिल सकेगा। श्री चौहान ने बताया कि इस वर्ष चने का बंपर उत्पादन हुआ है। अग्रिम अनुमान के अनुसार 2024-25 में चने का उत्पादन 115 लाख मीट्रिक टन से अधिक रहने की संभावना है, जो पिछले वर्ष के 110 लाख मीट्रिक टन उत्पादन से अधिक है। सरकार का यह निर्णय किसानों को सस्ती खाद देने और घरेलू उत्पादकों को लाभ पहुंचाने के लिए किया गया है।

किसानों से 100 फीसदी तुअर खरीदेगी सरकार: श्री चौहान

एमएसपी पर उपज खरीदी जारी

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के कहा कि किसानों से उनकी उपज न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी का कार्य किया जा रहा है।

श्री चौहान ने कहा कि दलहन में आत्मनिर्भरता हमारा संकल्प है और इस तारतम्य में प्रमुख तुअर उत्पादक राज्यों में तुअर की खरीद की जा रही है जिसमें तेजी आई है। दालों के घरेलू उत्पादन को बढ़ाने, किसानों को प्रोत्साहित करने और आयात पर निर्भरता कम करने के लिए सरकार ने खरीद वर्ष 2024-25 के लिए राज्य के उत्पादन के 100 प्रतिशत मूल्य समर्थन योजना के तहत तुअर, उड़द और मसूर की खरीद को मंजूरी दी है।

उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार ने बजट 2025 में यह भी घोषणा की है कि देश में दालों में आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए 2028-29 तक अगले चार वर्षों के लिए राज्य के उत्पादन का 100 प्रतिशत तुअर, उड़द और मसूर की खरीद की जाएगी। खरीफ 2024-25 सीजन के दौरान मूल्य समर्थन योजना के अंतर्गत आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना और उत्तर प्रदेश राज्यों में तुअर की खरीद को मंजूरी दी है। इसके साथ ही किसानों के हित में कर्नाटक में खरीद अवधि को 90 दिनों से आगे 30 दिन बढ़ाकर 1 मई तक करने को भी मंजूरी दी है।

श्री चौहान ने बताया कि आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र और तेलंगाना में नैफेड और एनसीसीएफ के माध्यम से एमएसपी पर खरीद जारी है और 25 मार्च 2025 तक इन राज्यों में कुल 2.46 लाख मीट्रिक टन तुअर (अरहर) की खरीद की गई है जिससे इन राज्यों के 1,71,569 किसान लाभान्वित हुए हैं। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में तुअर की कीमत वर्तमान में एमएसपी से ऊपर चल रही है।

श्री चौहान ने बताया कि भारत सरकार केंद्रीय नोडल एजेंसियों के माध्यम से किसानों से 100 प्रतिशत तुअर की खरीद के लिए प्रतिबद्ध है। सरकार ने किसानों को पंजीकरण और प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए नैफेड और एनसीसीएफ पोर्टलों का उपयोग सुनिश्चित किया है। श्री चौहान ने कहा कि केंद्र सरकार की ओर से मेरी सभी राज्य सरकारों से अपील है कि वे यह सुनिश्चित करें कि एमएसपी से नीचे कोई खरीद नहीं हो। हमारा उद्देश्य किसानों को फायदा पहुंचाना है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम कोई कोर कसर नहीं छोड़ेंगे।

मध्यप्रदेश में गेहूं की खरीदी शुरू

एमएसपी पर 5 मई तक खरीदा जायेगा गेहूं

भोपाल। विपणन वर्ष 2025-26 के लिये न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीदी मध्यप्रदेश एवं राजस्थान में शुरू हो गई है। पंजाब और हरियाणा में खरीदी अप्रैल से शुरु होगी। अब तक मध्य प्रदेश में 1,45,512 टन गेहूं खरीदा गया है, जो पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 14,233 टन ज्यादा है। मध्य प्रदेश ने केंद्र सरकार द्वारा 2025-26 के लिए तय एमएसपी 2,425 रुपये प्रति क्विंटल पर 125 रुपये प्रति क्विंटल बोनस देने की घोषणा की है। वहीं राजस्थान ने भी गेहूं के एमएसपी के ऊपर 150 रुपये प्रति क्विंटल बोनस देने की घोषणा की है। मध्य प्रदेश ने 2025-26 सीजन में करीब 80 लाख टन गेहूं खरीदने का लक्ष्य रखा है।

देश में 2024-25 (अप्रैल से मार्च) में 312.7 लाख टन गेहूं खरीदने का लक्ष्य था और 266 लाख टन गेहूं खरीदा गया। आगामी सीजन में खरीद पिछली खरीद से बेहतर रह सकती है क्योंकि देश के कई इलाकों में फसल अच्छी है। सरकार ने 2025-26 में रिकॉर्ड 1,150 लाख टन गेहूं उत्पादन का अनुमान लगाया है, जो इस साल के 1,132.9 लाख टन की तुलना में ज्यादा है। मध्यप्रदेश में इस वर्ष 94 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में गेहूं बोया गया है। प्रारंभिक अनुमान गेहूं उत्पादन का बेहतर है। प्रदेश में गेहूं उपार्जन के लिये 2648 खरीदी केन्द्र बनाये गये हैं।

चार वर्ष में नए मुकाम पर पहुंचाएंगे सहकारिता आंदोलन : डॉ. यादव

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 अन्तर्गत राज्य स्तरीय सम्मेलन

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश सरकार सर्वजनकल्याण के संकल्पों के साथ कार्य कर रही है। वर्तमान में पंचायत से लेकर मंत्रालय तक पारदर्शितापूर्ण कार्य शैली के कारण अन्य क्षेत्रों के साथ सहकारी क्षेत्र में समृद्ध हुआ है। गुजरात में दूध पर बोनस की जिस तरह व्यवस्था है, मध्यप्रदेश भी इस दिशा में आगे बढ़ रहा है। इसके साथ ही मध्यप्रदेश में मत्स्य पालन के लिए काफी बड़ा क्षेत्र है और हाल ही में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में भी उद्योग क्षेत्र के साथ सहकारिता ने कार्य करने की पहल की है।

मध्यप्रदेश में सहकारिता आंदोलन को गति दी जा रही है। अब सहकारिता क्षेत्र में व्यवस्थाएं काफी पारदर्शी हैं और मध्यप्रदेश में सहकारिता के विभिन्न आयामों पर कार्य किया जाएगा। आने वाले चार वर्ष में सहकारिता आंदोलन को नए मुकाम पर पहुंचाया जाएगा। डॉ. यादव ने समन्वय भवन में अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2025 के राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने सहकारिता विभाग में नवनियुक्त सहकारी निरीक्षकों के नियुक्ति पत्र भी सौंपे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सहकारिता विभाग के प्रयासों की सराहना की। डॉ. यादव ने कहा कि केंद्र सरकार ने सहकारिता में सभी के कल्याण का ध्यान रखा है।

मध्यप्रदेश में भी इसी तर्ज पर कार्य हो रहा है। मध्यप्रदेश किसानों, गौ पालकों और मत्स्य पालकों को सहकारी क्षेत्र में अधिक से अधिक लाभ दिलवाकर इस क्षेत्र में शिखर पर पहुंचेगा। डॉ. यादव ने कार्यक्रम में उत्कृष्ट कार्य करने वाली पैक्स, दुग्ध सहकारी संस्थाओं और मत्स्य पालक सहकारी संस्थाओं को पुरस्कार प्रदान किए।

इन संस्थाओं में विदिशा, इंदौर और खरगोन की संस्थाएं शामिल हैं। सहकारिता और खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास सारंग ने कहा कि मध्यप्रदेश सहकारिता क्षेत्र में अग्रणी हो रहा है। सहकारिता विभाग में कई नवाचार भी किए जा रहे हैं।

अपर मुख्य सचिव सहकारिता अशोक बर्णवाल ने स्वागत उद्बोधन दिया। कार्यक्रम में प्रमुख सचिव पशुपालन एवं डेयरी उमाकांत उमराव, प्रमुख सचिव मत्स्य पालन डी.पी. आहूजा, राज्य सहकारी विपणन संघ के प्रबंध संचालक आलोक कुमार सिंह, आयुक्त सहकारिता मनोज पुष्प, नाबार्ड क्षेत्रीय कार्यालय की मुख्य महा प्रबंधक सी. सरस्वती एवं बड़ी संख्या में प्रदेश की सहकारी संस्थाओं के प्रतिनिधि, जिला सहकारी बैंक, अपेक्स बैंक, पैक्स, दुग्ध एवं मत्स्य समितियों के साथ ही सहकारिता विभाग के अधिकारी और कर्मचारी भी उपस्थित थे। अपेक्स बैंक के प्रबंध संचालक मनोज कुमार गुप्ता ने आभार माना।

धान उपार्जन से संबंधित शिकायतों की जांच के लिये जांच दल गठित करने के निर्देश

भोपाल। खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन तथा अन्तर जिला/जिले में उपार्जन केन्द्रों से दी गई धान के सत्यापन एवं अन्य शिकायतों की जांच के लिये जांच दल गठित कर कार्यवाही करने के निर्देश जिला कलेक्टर्स को दिये गये हैं। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने विस्तृत जांच के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा है कि 7 दिन के अंदर विस्तृत जांच करायें।

जांच दल के अध्यक्ष कलेक्टर द्वारा नामांकित अपर/संयुक्त/डिप्टी कलेक्टर होंगे। जिला आपूर्ति नियंत्रक / खाद्य अधिकारी संयोजक होंगे। उप/सहायक आयुक्त सहकारिता/ महाप्रबंधक जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक जिला प्रबंधक मध्यप्रदेश स्टेट सिविल सप्लाईज कार्पोरेशन और जिला प्रबंधक मध्यप्रदेश वेयरहाउसिंग और लॉजिस्टिक्स कार्पोरेशन सदस्य होंगे। जांच दल द्वारा उपार्जित धान, धान परिवहन, धान जमा, धान कमी की मात्रा, मिलर्स को भुगतान की स्थिति, मिलरवार धान प्रदाय की मात्रा, धान उठाव की मात्रा और मिलरवार सीएमआर जमा मात्रा की विस्तृत जांच की जाएगी।

श्री राजपूत ने कहा है कि गोदामों में धान कम मात्रा में जमा होने के कारणों की जांच कराई जायें एवं संबंधित उपार्जन समिति/परिवहनकर्ता आदि से शार्टेज मात्रा की वसूली कर संबंधित किसानों को भुगतान किया जाएं। उपार्जन केन्द्रों पर धान की शार्टेज मात्रा की प्रतिपूर्ति बाजार एवं अन्य माध्यमों से कदापि नहीं कराई जाये।

मंडी बोर्ड के पेंशनरों को नियमित हो पेंशन का भुगतान : श्री कंषाना

मप्र राज्य कृषि विपणन बोर्ड के संचालक मंडल की बैठक

भोपाल। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि मंडी निधि में उपलब्ध धनराशि से मंडी बोर्ड के पेंशनरों को नियमित रूप से पेंशन भुगतान किया जाए। श्री कंषाना किसान भवन में मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड के संचालक मंडल की 143वीं बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे।

प्रदेश की कृषि उपज मंडियों में संचालित मिट्टी परीक्षण प्रयोगशालाओं में नियुक्त अमले तथा मंडी बोर्ड मुख्यालय के संविदा वाहन चालकों की नियमित पदों में समकक्षता का निर्धारण कर पारिश्रमिक में वृद्धि किए जाने की स्वीकृति प्रदान की गई। सभी महिला कर्मचारियों को सात दिवस के आकस्मिक अवकाश की भी स्वीकृति प्रदान की गई। पिछली बैठक के पालन प्रतिवेदन पर संतुष्टि प्रदान की गई।

बैठक में कृषि उपज मंडी समिति जैसीनगर जिला सागर के प्रांगण में बोर्ड निधि से कृषक संगोष्ठी भवन की स्वीकृति का अनुसमर्थन किया गया।

मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड के पुनरीक्षित अनुमान वर्ष 2024 -25 एवं बजट अनुमान 2025-26 पर भी विचार विमर्श किया गया। बैठक में प्रमुख सचिव कृषि एम. सेल्वेंद्रम, प्रबंध संचालक सह-आयुक्त मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड कुमार पुरुषोत्तम, संयुक्त आयुक्त सहकारी संस्थाएं अजय मिश्र, सदस्य मध्य प्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड अरुण सोनी उपस्थित थे।

साढ़े चार हजार सहकारी समितियों के चुनाव होंगे

4531 समितियों में अध्यक्ष और सदस्य चुने जाएंगे

भोपाल। मध्य प्रदेश में प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों (पैक्स) के चुनाव कार्यक्रम की घोषणा की गई है। मप्र राज्य सहकारी निर्वाचन प्राधिकारी ने ये चुनाव 5 मई से सितंबर तक कराने का निर्णय लिया है। इससे पहले यह चुनाव 2013 में हुए थे और तब से अब तक पैक्स के चुनाव नहीं हो पाए थे। इसके लिए मतदाता सूची तैयार करने का काम तेजी से शुरू हो गया है। 14 मई को सूची का अंतिम प्रकाशन होगा। मप्र राज्य सहकारी निर्वाचन प्राधिकारी ने चुनाव कार्यक्रम एक साल पहले जारी किया था, लेकिन लोकसभा चुनाव के चलते इसे टाल दिया गया था। अब, प्रदेश की 4531 प्राथमिक कृषि सारत सहकारी समितियों में अध्यक्ष और सदस्यों के चुनाव किए जाएंगे।

यह चुनाव किसानों के जरिए किए जाते हैं। चुनाव चार चरणों में होंगे और इस प्रक्रिया के तहत समितियों और बैंकों में संचालक मंडल का गठन किया जाएगा। वर्ष 2023 में विधानसभा चुनाव से पहले जबलपुर में चुनाव को लेकर एक याचिका दायर की गई थी। कोर्ट ने दिसंबर 2023 में चुनाव कराने के निर्देश दिए, लेकिन लोकसभा चुनाव के कारण चुनाव प्रक्रिया और देरी हुई।

चुनाव न होने से समितियों-बैंकों के नीतिगत निर्णय अटके: चुनाव न होने के कारण समितियों और बैंकों में नीतिगत निर्णय नहीं लिए जा पा रहे हैं। किसानों से जुड़ी समस्याओं का समाधान भी प्रभावित हो रहा है।

इन समस्याओं का समाधान होगा

यह चुनाव पिछले कई वर्षों से लंबित है, लेकिन अब प्रदेश में चुनाव प्रक्रिया शुरू हो रही है। इसके तहत 25 हजार से अधिक कर्मचारियों की जरूरत होगी, जिन्हें जीएडी से आदेश जारी कर चुनाव कराने के लिए नियुक्त किया जाएगा। इसके अलावा, चुनाव को सुचारू रूप से संचालन के लिए पुलिस बल की भी आवश्यकता होगी।

संस्था में प्रशासकों की स्थिति

चुनाव न होने के कारण, प्रदेश की लगभग 4531 प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों में फिलहाल प्रशासक कार्यरत है। इसी तरह प्रदेश के 38 जिला सहकारी बैंकों और अपेक्स बैंक में भी प्रशासक कार्य कर रहे हैं।

वर्ष 2013 में हुए थे चुनाव

वर्ष 2013 में चुनाव के बाद पांच वर्ष के लिए संचालक मंडल ने काम किया। इसके बाद वर्ष 2018 में चुनाव होना था, लेकिन विधानसभा चुनाव के चलते पैक्स चुनाव टल गया। वर्ष 2019 में लोकसभा चुनाव आ गया। इसके बाद कांग्रेस सरकार चुनाव की तैयारी करा रही थी, फिर सरकार गिर गई। वर्ष 2020 में कोरोना आ गया, इसके बाद निकाय चुनाव शुरू हो गए। वर्ष 2023 में चुनाव को लेकर हाईकोर्ट में याचिका दायर हुई। कोर्ट ने दिसम्बर 2023 में सरकार को चुनाव कराने के निर्देश दिए। इसके बाद फिर अलग-अलग कारणों से चुनाव टल गए।

खेती को फायदे का सौदा बनाने के लिए 6 सूत्रीय रणनीति : श्री चौहान

एफपीओ का प्रयोग कृषि उत्पादन लागत घटाने का ही उपक्रम

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने माही नेशनल को-आपरेटिव फेडरेशन आफ एफपीओ द्वारा आयोजित एफपीओ को मजबूत बनाना-किसानों को सशक्त बनाना कार्यक्रम का पूसा, नई दिल्ली में शुभारंभ किया। इस अवसर पर श्री चौहान ने कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और किसान उसकी आत्मा। किसान अन्नदाता, सब्जीदाता, फलदाता और जीवनदाता है।

उन्होंने कहा कि हमारे यहां छोटी जोत के आकार होते हैं। दुनियाभर में अगर देखें तो 5 से 10 हजार एकड़ के फार्म एक किसान के पास हैं जबकि हमारे यहां 86 प्रतिशत से ज्यादा छोटे व सीमांत किसान हैं, जिनके लिए आजीविका की गाड़ी चलाना मुश्किल होता है। इनके लिए खेती को फायदे का सौदा बनाने की हमारी 6 सूत्रीय रणनीति है- प्रति हेक्टेयर उत्पादन बढ़ाना, उत्पादन लागत घटाना, उत्पाद का उचित मूल्य देना, यदि कोई आपदा आ जाएं तो नुकसान की भरपाई करना, कृषि का विविधीकरण और धरती की सेहत का ख्याल रखना।

श्री चौहान ने कहा कि उत्पादन बढ़ाने के लिए पिछले वर्ष बीजों की 109 नई किस्में जारी की हैं। हमारा फोकस है कि टेक्नालॉजी को लैब टू लैंड तक पहुंचाएं लेकिन हमारी सीमाएं भी हैं। दूसरे देश जीएम सीड से बंपर उत्पादन करते हैं लेकिन हम अनुमति नहीं देते। दूसरे देशों में उत्पादन बहुत होता है लेकिन हमारे यहां कम है, क्योंकि हमें प्रकृति के साथ खिलवाड़ नहीं करना है। उन्होंने बताया कि फर्टिलाइजर पर सब्सिडी पिछले साल 2 लाख 54 हजार करोड़ रूपये थी। मोदी सरकार ने तय किया है कि डीएपी की बोरी 1350 रूपये में ही मिलेगी और 266 रूपये में यूरिया की बोरी मिलेगी।

श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि एफपीओ का प्रयोग उत्पादन की लागत घटाने का ही उपक्रम है। खाद-बीज खरीदना, उत्पाद बेचना, प्रोसेसिंग करना, ये अकेला किसान नहीं, किसानों का संगठन कर सकता है। देशभर में 10 हजार नए एफपीओ बन चुके हैं जिनमें से कई बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसानों को ठीक दाम मिलना भी आवश्यक है। उत्पाद के ठीक दाम देने के लिए एमएसपी की व्यवस्था की है। टमाटर, आलू, प्याज के लिए हमने योजना बनाई है। छोटे शहरों में उत्पाद सस्ता बिकता है, ऐसे में नाफेड या राज्य की एजेंसी, किसान के साथ मिलकर काम करते हुए उनके उत्पाद दूसरे शहर में आएंगे, तो ट्रांसपोर्ट का खर्च सरकार उठाएगी। श्री चौहान ने कहा कि प्याज पर 40 प्रतिशत एक्सपोर्ट ड्यूटी थी, उसे घटाकर 20 प्रतिशत किया गया ताकि हमारे किसान को बेहतर दाम मिले। कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के कृषि मंत्री ऐंदल सिंह कंशाना, भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय महामंत्री मोहिनी मिश्र, अ.भा. संगठन मंत्री दिनेश कुलकर्णी एवं माही नेशनल को-आपरेटिव फेडरेशन आफ एफपीओ के पदाधिकारी, बड़ी संख्या में सैकड़ों एफपीओ के सदस्य किसान भाई-बहन और कृषि वैज्ञानिक आदि उपस्थित थे।

प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की किसानों से पराली न जलाने की अपील

बोर्ड ऑफ डाइरेक्टरेट की 169वीं बैठक संपन्न

भोपाल। प्रदेश में पराली जलाने से उत्पन्न वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने ठोस कदम उठाने का निर्णय लिया है।

बोर्ड के निदेशक मण्डल की 169वीं बैठक आयोजित की गई। बैठक में धान एवं गेहूं की कटाई के पश्चात जलने वाली पराली से होने वाले प्रदूषण पर गहन चर्चा हुई और इसके समाधान के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। निदेशक मण्डल की बैठक की अध्यक्षता विभाग के प्रमुख सचिव एवं अध्यक्ष, डॉ. नवनीत मोहन कोठारी ने की।

डॉ. कोठारी ने निर्देश दिये हैं कि प्रदेश में किसान पराली न जलाएं, इसके लिए व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए। उन्होंने बताया कि इसके लिए प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। इस अभियान के लिए 8 करोड़ रुपये का बजट स्वीकृत किया गया है। डॉ. कोठारी ने पराली के वैकल्पिक उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदेश में स्थापित ताप विद्युत गृहों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ अप्रैल के प्रथम सप्ताह में बैठक आयोजित करने का निर्देश दिये हैं। बैठक में कटाई के बाद बचे बायोमास के वैकल्पिक उपयोग पर कार्ययोजना तैयार किये जाना का निर्णय लिया गया। डॉ. कोठारी ने बताया है कि राज्य सरकार द्वारा उठाए गए ये कदम प्रदेश में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होंगे।

राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत प्राकृतिक खेती का प्रचार

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने प्राकृतिक कृषि को अपनाने के लिए 1 करोड़ किसान को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन को एक केंद्रीय प्रायोजित योजना के रूप में मंजूरी दी है। यह योजना 15वीं वित्त आयोग की अवधि तक देश के विभिन्न राज्यों में लागू होगी। योजना का कुल बजट 2481.00 करोड़ रुपये है। यह जानकारी केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने राज्यसभा में एक लिखित उत्तर में दी।

श्री चौधरी ने बताया कि एनएमएलएफ योजना के अंतर्गत, प्राकृतिक खेती के केंद्रों पर राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया है। अतिरिक्त रूप से 70,021 कृषि साथी पहले ही मिट्टी स्वास्थ्य और प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षित किए जा चुके हैं। इसके अतिरिक्त 70,021 कृषि सखियों को मृदा स्वास्थ्य और एनएफ पर पहले ही प्रशिक्षित किया जा चुका है।

एनएमएनएफ में परिकल्पित अन्य सभी गतिविधियां शुरू हो चुकी हैं और राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं, जिसमें किसानों का नामांकन और एनएफ मॉडल प्रदर्शन फार्मों का विकास शामिल है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 13/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

साप्ताहिक सुविचार

वही पवित्र है, धीर है और प्रशंसनीय है, जो विपत्ति में भी अपना स्वभाव नहीं छोड़ता है। - अज्ञात

कृषि शिक्षा के साथ सांप सीढ़ी का खेल

कृषक दूत सम्पादकीय

प्रदेश में कृषि शिक्षा की खुलेआम अनदेखी की जा रही है। राजनीतिक विवशता के रहते धड़ाधड़ कृषि कालेज खुलते जा रहे हैं लेकिन इन कालेजों में पढ़ाने वाले प्राध्यापकों की भारी कमी है। हाल ही में खोले गये खुरई, पंवारखेड़ा एवं पन्ना कृषि कालेज में कृषि शिक्षा देने वालों का भारी टोटा है। जो कृषि कालेज पहले से ही संचालित हैं वहां भी प्राध्यापकों की भारी कमी है। इन कृषि महाविद्यालयों के शैक्षणिक संवर्ग के प्राध्यापक लगातार सेवानिवृत्त होते जा रहेहैं। पिछले कई सालों से इन पदों पर भर्तियां एवं पदोन्नति न होने से कृषि शिक्षा बुरी तरह प्रभावित हुई है। प्रदेश में वर्तमान में दोनो कृषि विश्वविद्यालयों के अन्तर्गत 12 कृषि एवं 2 उद्यानिकी कालेज हैं जिसमें तकरीबन 550 प्राध्यापकों के पद स्वीकृत हैं जिसमें 60 प्रतिशत पद रिक्त हैं। इन 14 कृषि एवं उद्यानिकी महाविद्यालयों में 11 सौ से अधिक छात्र कृषि शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आने वाले दो वर्षों के अंदर 25 से 30 फीसदी प्राध्यापक और सेवानिवृत्त हो जायेंगे। आईसीएआर की डीन कमेटी रिपोर्ट के मुताबिक कृषि महाविद्यालयों में 5 छात्र के साथ एक प्राध्यापक का होना जरूरी है। मध्यप्रदेश के कृषि कालेजों में किसी भी तरह के अनुपात का पालन नहीं हो रहा है। मध्यप्रदेश सरकार कृषि शिक्षा के प्रति कभी भी गंभीर नहीं रही। प्रदेश स्थित कृषि महाविद्यालयों का स्तर दिनों-दिन गिरता जा रहा है। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर की रैंकिग 47वें पायदान पर चली गई है। अनुसंधान कार्यों में लगे कृषि शोधार्थियों को किसी भी तरह की सुविधायें नही दी जा रही है। पीएचडी छात्रों को मध्यप्रदेश में किसी भी तरह की स्कालरशिप नहीं दी जाती जबकि अन्य राज्यों मे कुछ न कुछ पीएचडी स्कालर्स को छात्रवृत्ति दी जाती है। कृषि विश्वविद्यालय ने इस संबंध में राज्य शासन को कई बार पत्र भेजा है लेकिन फाइल मंत्रालय में धूल खा रही है। कृषि शिक्षा को महत्व दिये बिना कृषि विकास संभव नहीं है। बदलते जलवायु परिवर्तन एवं खेती में नित हो रहे नवाचार का प्रसार कृषि शिक्षित छात्र ही कर सकते हैं। खेती में मिट्टी परीक्षण का महत्व, संतुलित उर्वरक उपयोग एवं पौध संरक्षण के प्रति जागरूकता किसानों में अत्यधिक जरूरी है। उन्नत किस्म के बीजों का उपयोग एवं अत्याधुनिक कृषि उपकरणों का उपयोग खेती में बहुत जरूरी है। राज्य सरकार को कृषि शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हुये कृषि महाविद्यालयों में प्राध्यापकों के रिक्त पदों की भर्ती तत्काल करना चाहिये। गुणवत्तापूर्ण कृषि शिक्षा को अनिवार्य किये जाने की जरूरत है। इसके लिये सुयोग्य कृषि शिक्षा देने वाले प्राध्यापकों की जरूरत है। कृषि उत्पादकता कृषि में आधुनिकता के समावेश से ही संभव है। किसानों की आमदनी बढ़ाने एवं खेती को लाभकारी बनाने के लिये कृषि शिक्षा को सुदृढ़ किये जाने की आवश्यकता है।

कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

अनूपपुर। कृषि विज्ञान केंद्र इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक द्वारा एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन पौध किस्म व कृषक अधिकार प्राधिकरण विषय पर किया गया जिसमें मुख्य रूप से इंदिरा गांधी जनजाति विश्वविद्यालय कुलसचिव प्रो. एन.एस. हरिनारायण मूर्ति, प्रोफेसर नवीन शर्मा, डॉ. के.वी. सहारे वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, मंडला, डॉ. एस.के. पाण्डेय वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख, कृषि विज्ञान केन्द्र अमरकंटक उपस्थित रहे। कार्यक्रम में चार जिले के 300 से अधिक किसानों ने भाग लिया

कार्यक्रम के दौरान डॉ. पाण्डेय द्वारा कृषक अधिकार, पौध किस्म व कृषक अधिकार प्राधिकरण विषय में विस्तार से जानकारी देते हुए किसानों को इसके लाभों से अवगत कराया। कुल सचिव प्रो. एन.एस. हरिनारायण मूर्ति द्वारा किसानों को परंपरागत किस्म को पंजीयन कर अपने नाम से किस्म बनाने हेतु प्रेरित किया व परंपरागत किस्म को अधिक से अधिक बढ़ावा देने के लिये विचार व्यक्त कि। प्रो. नवीन शर्मा द्वारा किसानों को पारंपरिक किस्म के संरक्षण के महत्व पर विस्तार से चर्चा करते हुए कोदो, कुटकी, रागी आदि के बीजों के संरक्षण के महत्व को बताया। डॉ. के.वी. द्वारा कृषक अधिकार प्राधिकरण में किसानों को पंजीयन की प्रक्रिया को विस्तार पूर्वक बताया।

संदीप चौहान वैज्ञानिक कृषि प्रसार व नोडल अधिकारी ने किसानों को सब्जियों की खेती में मल्चिंग व ड्रिप सिंचाई पद्धति के लाभ से अवगत कराया। डॉ. योगेश कुमार वैज्ञानिक कृषि वानिकी ने किसानों को बागवानी फसलों की खेती पर विस्तार से जानकारी दी। साथ-साथ वन संरक्षण पर विस्तार से अवगत कराया। सूर्यकांत नागरे, वैज्ञानिक शस्य विज्ञान ने फसलों में उत्पादन अधिक लेने की तकनीक को पर विस्तार से चर्चा की।

डॉ. अनीता ठाकुर वैज्ञानिक मृदा विज्ञान ने मृदा संरक्षण की तकनीक पर चर्चा करते हुए मिट्टी परीक्षण के लाभ को बताया। कार्यक्रम के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक सुनील कुमार राठौर, डॉ. अनिल कुर्मी द्वारा समसामयिक सलाह किसानों को दी गई। कार्यक्रम में जिला शहडोल, डिंडोरी, मंडला व अनूपपुर जिले के 300 से अधिक किसानों ने भाग लिया।

कृषक प्रशिक्षण एवं कृषि वानिकी दिवस का आयोजन

शहडोल। कृषि विज्ञान केन्द्र शहडोल के वरिष्ठ वैज्ञानिक सह प्रमुख डॉ. मृगेन्द्र सिंह के मार्गदर्शन में कृषि विज्ञान केन्द्र कल्याणपुर, विकास खण्ड सोहागपुर में कृषि वानिकी दिवस एवं कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर से आये कीट शास्त्र विभाग के डॉ. राकेश मरावी ने बताया की काली सैनिक कीट किसानों के लिए किस प्रकार से फायदेमंद हैं व पालन के विस्तृत विधि लाभदायक व उपयोगी है।

कृषि विज्ञान केन्द्र के डॉ. मृगेन्द्र सिंह ने पेड़-पौधों व वन की परिभाषा, महत्व, लाभ प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष एवं मानव जीवन में होने वाले उपयोग और विभिन्न वन नीति पर विस्तृत जानकारियां दी। कृषि वानिकी विशेषज्ञ भागवत प्रसाद पन्द्रे ने कहा कि तपती धरती करे पुकार, वृक्ष लगाकर करें श्रंगार।

उन्होंने कम से कम एक पेड़ लगाने की शपथ दिलाई। किसानों को हरा चारा, वृक्षारोपण लगाने के साथ-साथ उसके उपयोग एवं महत्व के बारे में जानकारियां दी। उक्त कार्यक्रम में शम्भू नाथ विश्वविद्यालय शहडोल के लगभग 25 विद्यार्थियों और 65 किसानों व महिला कृषकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र के सभी स्टॉफ का विशेष योगदान रहा।

ग्रामीण युवाओं को फल उद्यान का प्रशिक्षण

महासमुंद। कृषि विज्ञान केंद्र महासमुंद द्वारा ग्रामीण युवाओं का कौशल प्रशिक्षण अंतर्गत फल उद्यान स्थापना एवं देखभाल विषय पर ग्राम धनसुली में 6 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। उक्त प्रशिक्षण में धनसुली ग्राम के 28 कृषक एवं कृषक महिलाएं सम्मिलित हुए जिन्हें फल उद्यान की स्थापना के समय ध्यान रखने वाली बातें, फलदार पौधों की उन्नत प्रवर्धन तकनीकें, पौध संरक्षण पर विस्तृत जानकारी देने के साथ ही शासन की योजनाओं से भी जागरूक कराया गया। कृषि विज्ञान केंद्र महासमुन्द के प्रक्षेत्र का भ्रमण भी कराया गया।

अनमोल वचन

केवल न्याय में ही वास्तविक सुख है। अन्याय करने वाले को कभी न कभी दुखी होना पड़ता है। - सुकरात

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

चैत्र शुक्ल/बैशाख कृष्ण पक्ष विक्रम संवत 2082 ईस्वी सन् 2024-25

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
01 अप्रैल 25	मंगलवार	चैत्र शुक्ल-03	
02 अप्रैल 25	बुधवार	चैत्र शुक्ल-04/05	
03 अप्रैल 25	गुरुवार	चैत्र शुक्ल-06	
04 अप्रैल 25	शुक्रवार	चैत्र शुक्ल-07	
05 अप्रैल 25	शनिवार	चैत्र शुक्ल-08	दुर्गाष्टमी
06 अप्रैल 25	रविवार	चैत्र शुक्ल-09	श्री राम नवमी
07 अप्रैल 25	सोमवार	चैत्र शुक्ल-10	
08 अप्रैल 25	मंगलवार	चैत्र शुक्ल-11	कामदा एकादशी
09 अप्रैल 25	बुधवार	चैत्र शुक्ल-12	
10 अप्रैल 25	गुरुवार	चैत्र शुक्ल-13	प्रदोष व्रत
11 अप्रैल 25	शुक्रवार	चैत्र शुक्ला-14	रेणुका चतुर्दशी
12 अप्रैल 25	शनिवार	चैत्र शुक्ल-15	स्नानदान पूर्णिमा
13 अप्रैल 25	रविवार	बैशाख कृष्ण-01	
14 अप्रैल 25	सोमवार	बैशाख कृष्ण-01	

- **अनीता कुमारी पांडेय**
  पीएचडी स्कॉलर (पादप रोग)
- **डॉ. रजनी सिंह ससौड़े**
  वैज्ञानिक (पादप रोग, विभाग)
- **नीलम सोनी**
  पीएचडी स्कॉलर (पादप रोग)

राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

मूंग की समेकित खेती एवं रोग प्रबंधन

मूंग एक प्रमुख दलहन फसल है, जो प्रोटीन और पोषक तत्वों से भरपूर होती है। मध्य प्रदेश के मालवा, निमाड़ और बुंदेलखंड में इसकी खेती होती है लेकिन विभिन्न रोग उत्पादन को प्रभावित करते हैं। बीज उपचार, फसल चक्र और जैविक-रासायनिक नियंत्रण से किसानों की उपज और आय में सुधार संभव है।

मूंग एक महत्वपूर्ण दलहन फसल है जिसे प्रोटीन से भरपूर और सुपाच्य होने के कारण भारतीय आहार में विशेष स्थान प्राप्त है। यह बीमार और कमजोर लोगों के लिए आदर्श आहार मानी जाती है। मूंग की प्रमुख किस्में हरी मूंग (छिलके वाली), पीली मूंग (धुली दाल) और साबुत मूंग हैं जिनका उपयोग अंकुरित मूंग, सलाद, खिचड़ी, हलवा, दाल और करी में किया जाता है। पोषण की दृष्टि से मूंग में 24 ग्राम प्रोटीन, 8 ग्राम फाइबर, 132 मिलीग्राम कैल्शियम, 6.7 मिलीग्राम आयरन और 1246 मिलीग्राम पोटैशियम पाया जाता है, जो हड्डियों और मांसपेशियों को मजबूत बनाता है। यह गर्मी व खरीफ दोनों मौसमों में उगाई जाती है और कम पानी की आवश्यकता के कारण सूखा प्रभावित क्षेत्रों के लिए लाभदायक है। मध्य प्रदेश में इसकी खेती मुख्य रूप से मालवा, निमाड़ और बुंदेलखंड में होती है। सरकार ने कृषि क्षेत्र के लिए रुपये 58,257 करोड़ का प्रावधान किया है, जिसमें मुख्यमंत्री कृषक उन्नति योजना और प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना शामिल हैं। मूंग का समर्थन मूल्य रुपये 8,682 प्रति क्विंटल तय किया गया है जिससे किसानों की आय बढ़ रही है।

मूंग में होने वाले प्रमुख रोग, कारण और नियंत्रण

मूंग की फसल में कई प्रकार के रोग लगते हैं जो उत्पादन और गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं। सही पहचान और नियंत्रण से इन रोगों के प्रभाव को कम किया जा सकता है।

उकठा रोग

कारण: यह रोग फ्यूजेरियम ऑक्सीस्पोरम नामक फफूंदी के कारण होता है, जो मिट्टी में कई वर्षों तक जीवित रह सकती है। यह पौधों की जड़ों पर हमला करती है जिससे पौधा मुरझा जाता है और पत्तियां पीली होकर सूख जाती हैं।

नियंत्रण के उपाय

खेत में जल निकासी की अच्छी व्यवस्था करें ताकि जलभराव न हो और फसल स्वस्थ बनी रहे। बीज बोने से पहले ट्राइकोडर्मा विरिडी 5 ग्राम प्रति किलो बीज से उपचारित करें, जिससे फसल की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़े। यदि किसी पौधे में बीमारी के लक्षण दिखें तो उसे तुरंत उखाड़कर नष्ट करें और फसल चक्र अपनाएँ, जिससे मिट्टी में रोगों का प्रसार न हो। रासायनिक नियंत्रण के लिए कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें, ताकि फसल सुरक्षित रहे और अच्छी पैदावार मिले।

चूर्णिल आसिता

कारण: यह रोग इरीसाइफी पोलिगोनी नामक फफूंद से फैलता है। इसकी वजह से पत्तियों पर सफेद चूर्ण जैसा पदार्थ दिखता है, जिससे पौधों की प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया प्रभावित होती है।

नियंत्रण के उपाय

फसल के शुरुआती चरण में सल्फर 80 प्रतिशत डब्ल्यूपी 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें, जैविक नियंत्रण के लिए ट्राइकोडर्मा विरिडी का उपयोग करें और अत्यधिक नमी व घनी बुवाई से बचें। यदि रोग का प्रभाव बढ़े, तो कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करें, जिससे मूंग की फसल को सुरक्षित रखा जा सके।

जड़ सड़न

कारण: यह रोग राइजोक्टोनिया सोलानी फफूंद के कारण होता है, जो जड़ों को सड़ा देता है और पौधे धीरे-धीरे मुरझा जाते हैं।

नियंत्रण के उपाय

बीज बोने से पहले ट्राइकोडर्मा विरिडी 5 ग्राम प्रति किलो बीज से उपचार करेंए जिससे बीज जनित रोगों से बचाव हो सके। खेत में जलभराव न होने दें और हर सीजन में फसल चक्र अपनाएँ ताकि मिट्टी की उर्वरता बनी रहे और रोगों का प्रसार रुके।

पत्तियों पर फफूंद या अन्य रोगों का असर दिखते ही कापर ऑक्सीक्लोराइड 50 प्रतशित डब्ल्यूपी 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। फसल के शुरुआती चरण में सल्फर 80 प्रतिशत डब्ल्यूपी 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में छिड़काव करने से फफूंद जनित रोगों से बचाव होता है। जैविक नियंत्रण के लिए ट्राइकोडर्मा विरिडी का खेत में प्रयोग करें और अत्यधिक नमी व घनी बुवाई से बचें। यदि रोग बढ़ रहा हो तो कार्बेन्डाजिम 0.1% का छिड़काव करें।

मोजेक वायरस

कारण: मूंग की फसल में मोजेक वायरस एक गंभीर रोग है, जो मुख्य रूप से सफेद मक्खी के माध्यम से फैलता है। यह रोग पत्तियों पर पीले धब्बे उत्पन्न करता है, जो धीरे-धीरे पूरे पत्ते को प्रभावित कर प्रकाश संश्लेषण को बाधित करता है, जिससे पौधों की वृद्धि रुक जाती है और उपज में भारी कमी आती है।

नियंत्रण के उपाय

फसल को स्वस्थ रखने के लिए रोग प्रतिरोधी किस्मों (टीजेएम-3, एचयूएम-16) का चयन करें, जिससे बीमारी का खतरा कम हो। सफेद मक्खी नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एसएल 0.5 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें, ताकि रोग फैलाने वाले कीट नष्ट हो सकें। यदि किसी पौधे में संक्रमण दिखे, तो उसे तुरंत हटा दें और खेत को खरपतवार मुक्त रखें जिससे रोग फैलने का खतरा कम हो। बेहतर उत्पादन के लिए फसल चक्र अपनाएं और मूंग के बाद दूसरी फसल लगाएं जिससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहे और रोगों का प्रभाव कम हो। इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एसएल 0.3 मिली प्रति लीटर पानी का छिड़काव करें, ताकि फसल सुरक्षित रहे।

तना झुलसा

कारण: यह रोग मैक्रोफोमीना फेजोलिना फफूंद के कारण होता है, जो पौधों की तने की ऊपरी सतह को प्रभावित करता है और पौधे के सूखने तथा उत्पादन में कमी का कारण बनता है। जो तनों पर भूरे-काले धब्बे बना देता है और पौधे सूखने लगते हैं।

नियंत्रण के उपाय

तना झुलसा रोग से बचाव के लिए रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें और बीज उपचार के लिए कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलो बीज का उपयोग करें। खेत में जल निकासी की अच्छी व्यवस्था बनाए रखें और अधिक नमी व घनी बुवाई से बचें। यदि रोग के लक्षण दिखें तो कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी 2 ग्राम प्रति लीटर या कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। संक्रमित पौधों को तुरंत हटा दें और खेत को खरपतवार मुक्त रखें। रोग को फैलने से रोकने के लिए फसल चक्र अपनाएं और मूंग के बाद दूसरी फसल लगाएं। जैविक नियंत्रण के लिए ट्राइकोडर्मा विरिडी का प्रयोग करें, जिससे मिट्टी में लाभकारी सूक्ष्म जीव बढ़ें और फसल का प्राकृतिक रूप से संरक्षण हो सके।

एन्थ्रेक्नोज

कारण: मूंग में एन्थ्रेक्नोज रोग कोलेट्रोट्रीकम लिंडेमुथिएनम कवक के कारण होता है। इस रोग के कारण पौधों की पत्तियों, तनों और फली पर गहरे भूरे से काले धब्बे बनते हैं, जिससे फसल की बढ़वार रुक जाती है और उत्पादन प्रभावित होता है। पत्तियों, तनों और फली पर भूरे-काले धब्बे बन जाते हैं।

नियंत्रण के उपाय:

प्रमाणित बीजों का उपयोग करें और बीज उपचार करें। जलभराव से बचने के लिए जल निकासी सुनिश्चित करें। रोग दिखने पर कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में छिड़काव करें। संक्रमित पौधों को तुरंत उखाड़कर नष्ट करें, ताकि रोग का फैलाव रोका जा सके और फसल सुरक्षित रहे।

मूंग की फसल को रोगों से बचाने के लिए सही कृषि पद्धतियों का पालन आवश्यक है। बीज उपचार, जल निकासी की उचित व्यवस्था और फसल चक्र अपनाने से संक्रमण का खतरा कम होता है। जैविक उपचार सुरक्षित होते हैं, जबकि आवश्यकता पड़ने पर रसायनों का संतुलित उपयोग किया जा सकता है। सतत निगरानी और देखभाल से पैदावार बढ़ती है और किसान की आय में सुधार होता है। जैविक कीटनाशकों का प्रयोग करने से मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है। रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन और समय पर फसल निरीक्षण करने से बेहतर उत्पादन संभव है।

● ए.के. सिंह ● ए.के. त्रिपाठी
कृषि विज्ञान केन्द्र, ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर (म.प्र.)
● रिचा सिंह
ज.ने.कृ.वि.वि., कृषि विज्ञान केन्द्र, सागर-2 (म.प्र.)

उड़द की वैज्ञानिक खेती

उड़द कम समय में पककर तैयार होने वाली खरीफ की महत्वपूर्ण फसल है। मध्यप्रदेश में खरीफ में उड़द की खेती लगभग 2 लाख हेक्टेयर की जाती है व प्रदेश की उत्पादकता 3-4 क्विंटल/हेक्टेयर है। उड़द की फसल कम समय में पककर तैयार होने के कारण सघन फसल प्रणाली के लिये भी उपयुक्त हैं साथ ही दलहनी फसलें होने से आगामी फसल के लिए नत्रजन छोड़ती है जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है।

उड़द की पकी हुई फसल से दाना निकालने के उपरांत भूसा बहुत ही पौष्टिक तथा स्वादिष्ट होता है जिसको पशु बड़े ही चाव से खाते हैं। उड़द में 25 प्रतिशत प्रोटीन व प्रचुर मात्रा में फास्फोरिक अम्ल पाया जाता है इस फसल का चारा पशुओं में दूध की मात्रा को भी बढ़ाता है। अत: उड़द की हरी फसल पशुओं को हरे चारे के रूप में खिलाई जाती है एवं फलियों की तुड़ाई के बाद इसकी हरी खाद भी बनाई जा सकती है जिससे मृदा में जीवांश कार्बन व पोषक तत्वों की उपलब्धता में बढ़ोत्तरी होती है एवं मृदा स्वास्थ्य बेहतर होता है।

उड़द की उत्पादकता कम होने के कारण

- अधिक उत्पादन क्षमता एवं उन्नत बीजों की कमी।
- सीमान्त एवं अनउपजाऊ भूमियों में उगाना एवं उन्नत शस्य तकनीकियों को न अपनना।
- असंतुलित एवं अपर्याप्त उर्वरक प्रयोग, मुख्य रूप से फॉस्फोरस की कमी।
- पीला मोजेक रोग का प्रकोप।

भूमि का चुनाव व तैयारी

हल्की रेतीली दुमट या मध्यम प्रकार की भूमि जिसका पीएच 7- 8 के मध्य हो व पानी का निकास की समुचित व्यवस्था हो वह उड़द के लिये उपयुक्त है। दो-तीन बार हल चलाकर खेत की मिट्टी को भुरभुरा व नींदा रहित करें साथ ही पाटा लगाकर खेत को समतल करना चाहिए।

बीज का चुनाव, मात्रा एवं बोने का समय

पानी के समुचित निकास वाली जमीन में उड़द की खेती अच्छी होती है। वर्षा आरम्भ होने के बाद दो-तीन बार हल चला कर खेत तैयार करना चाहिये। बोनी हेतु शुद्ध, प्रमाणित व स्वस्थ बीज की 15-20 किग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर उपयोग करना चाहिये जिससे 3 से 3.5 लाख तक पौध संख्या (प्रति हेक्टेयर) मिल सकेगी। जून के अंतिम सप्ताह से लेकर जुलाई के द्वितीय सप्ताह तक बोनी करना चाहिए। बीज 4 से.मी. की गहराई पर 10 से.मी. दूरी रखते हुए बोना चाहिये। कतारों से कतारों की दूरी 30 से.मी. रखना चाहिये।

बीजोपचार

बोनी से पहले बीज को फफूंदनाशक दवा कार्बेन्डाजिम या कार्बेन्डाजिम+थायरम की 2 ग्राम मात्रा से उपचारित करना चाहिये। उपचारित बीज को राइजोबियम व पी.एस.बी. कल्चर से निवेशित (उपचारित) करना चाहिए। इस हेतु कल्चर की 5-10 ग्राम प्रति किग्रा. बीज के मान से उपयोग करना चाहिए।

खाद व उर्वरक

खेत की मिट्टी परीक्षण के बाद उर्वरकों की संतुलित मात्रा का प्रयोग करना ज्यादा लाभदायी रहेगा। भूमि की उर्वरा शक्ति बनाये रखने के लिए हर दो या तीन वर्ष में एक बार अपने खेतों में सड़ी हुई गोबर की खाद (100-150 क्विं. प्रति हे.) या वर्मीकम्पोस्ट आदि का उपयोग करना चाहिये। उड़द के बेहतर उत्पादन हेतु 20 किलो नत्रजन और 50 किलो स्फुर 20 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर प्रयोग करना चाहिये। जिसकी पूर्ति डी.ए.पी. 100 कि.ग्रा.+म्युरेट ऑफ पोटाश 30 कि.ग्रा अथवा एन. पी. के (12:32:16) 150 कि.ग्रा. अथवा यूरिया 40 कि.ग्रा.. सुपर फास्फेट 250 कि.ग्रा . म्युरेट ऑफ पोटाश 30 कि.ग्रा. से की जा सकती है। खाद उर्वरक की संपूर्ण मात्रा बूवाई पूर्व खेत में डालना चाहिये।

सिंचाई

फसल की क्रांतिक अवस्था (फूल-फल बनने की अवस्था) पर यदि खेत में नमी न हो तो फूल कम लगते हैं तथा फलियों में दाने कम भरते हैं साथ ही दानों का आकार छोटा हो जाता है जिससे उत्पादन प्रभावित होता है अत: ऐसी स्थिति में एक सिंचाई अवश्य करनी चाहिये।

निंदाई-गुड़ाई व खरपतवार नियंत्रण

फसल एवं खरपतवार की प्रतिस्पर्धा की अंतिम अवधि बुवाई के 15-30 दिनों तक रहती है। इस बीच निंदाई करने या डोरा चलाने से खरपतवार नष्ट हो जाते हैं साथ ही भूमि में वायु का संचार होता है जिससे पौधों की ग्रंथियों में क्रियाशील जीवाणुओं द्वारा वायुमण्डलीय नत्रजन एकत्रित करने में सहायता मिलती है। प्रथम निदाई बुवाई के 15-20 दिन बाद व दूसरी निदाई 35-40 दिन की अवस्था पर करें। अथवा बोनी के बाद तथा अंकुरण के पूर्व पेंडिमिथलीन 30 ई.सी. 3 लीटर को 500 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर के मान से भूमि में छिड़काव करें। तत्पश्चात् 25-30 दिन की अवस्था पर निदाई करें। खड़ी फसल में नीदा नियंत्रण हेतु इमेजाथापर 750 मि. ली. 12-15 दिन की अवस्था पर छिड़काव करें।

उड़द की उन्नत किस्में

किस्में	पकने की अवधि	प्रति हेक्टेयर उपज (किग्रा)	अन्य विवरण
टी 9	70-80	1000-1200	पौधा सीधा तथा दाने काले होते हैं। पूरे प्रदेश के लिए विशेषकर द्विफसली क्षेत्रों हेतु उपयुक्त।
जवाहर उड़द 2	75-80	1200-1500	सतपुड़ा विंध्यांचल तथा बुंदलेखण्ड क्षेत्र के लिए उपयुक्त।
जवाहर उड़द 3	70	1500-2000	सम्पूर्ण मध्य प्रदेश के लिए उपयुक्त। पीला मोजेक प्रतिरोधी
जे.यू. 86	75-80	1000-1200	सम्पूर्ण मध्य प्रदेश के लिए उपयुक्त। पीला मोजेक सहनशील
खरगोन 3	90	1000-1200	दाना बड़ा व काला, साधारण फैलने वाली निमाड़ एवं मालवा क्षेत्र के लिए उपयुक्त।
पंत यू 19	75-80	1000-1200	पीला मोजेक प्रतिरोधी
पंत यू 30	10	1200-1500	दाना मध्यम व काले रंग का। पीला मोजेक प्रतिरोधी
पंत यू 31	75-80	1200-1500	सम्पूर्ण मध्य प्रदेश के लिए उपयुक्त। पीला मोजेक प्रतिरोधी
पंत यू 40	75-80	1200-1500	सम्पूर्ण मध्य प्रदेश के लिए उपयुक्त। पीला मोजेक सहनशील
के.यू. 96-3	70-72	1200-1500	सम्पूर्ण मध्य प्रदेश के लिए उपयुक्त। पीला मोजेक सहनशील
एल.बी.जी. 20	75-80	1000-1200	सम्पूर्ण मध्य प्रदेश के लिए उपयुक्त। पीला मोजेक प्रतिरोधी
आई.पी.यू. 94-1	70-75	1200-1400	सम्पूर्ण मध्य प्रदेश के लिए उपयुक्त। पीला मोजेक प्रतिरोधी
पी.डी.यू. 1	70-80	1200-1400	जायद के लिये उपयुक्त तथा पीत विषाणु रोग के प्रति अवरोधी
टी.पी.यू. 4	70-80	1000-1200	दाना मध्यम आकार का होता है।
एल.बी.जी 402	78	1080	दाना बड़ा होता है।
प्रताप उड़द 1	70-75	1200-1400	पीला मोजेक प्रतिरोधी, खरीफ एवं जायद के लिये उपयुक्त
आई.पी.यू. 2-43	70-72	1300-1500	पीला मोजेक प्रतिरोधी, खरीफ एवं जायद के लिये उपयुक्त
आई.पी.यू. 11-02	80-85	1200-1500	उच्च प्रोटीन (26 प्रतिशत), पीला मोजेक, यूएलसीवी, पीएम, एन्थ्रेक्नोज और सर्कोस्पोरा लीफस्पॉट के प्रति प्रतिरोधी
आई.पी.यू. 10-26	70-75	1200-1500	पीला मोजेक, सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बों के प्रति अत्यधिक प्रतिरोधी, यूएलसीवी, स्टेम नेक्रोसिस, वेब ब्लाइट, बीएलबी, पीएम, एन्थ्रेक्नोज के प्रति प्रतिरोधी

पौध संरक्षण

प्रमुख कीट

फलीछेदक कीट: यह कीट प्रारंभ में हरी मुलायम पत्तियों को खाता है। फली बनने पर फलियों में छेदकर दानों को खाकर क्षति पहुँचाता है। हेलिकोवर्पा, तम्बाकू की सुंडी एवं चित्तीदार फली छेदक कीट प्रमुख रूप से क्षति पहुँचाते हैं। इनके जैविक प्रबंधन हेतु वैसिलस थुरिनजैन्सिस की 1 किग्रा/हेक्टेयर अथवा एच.एन.पी.व्ही.-250 एल.ई की 1 मिली अथवा निम्बोली का सत 5 प्रतिशत की 50 ग्राम मात्रा प्रति लीटर अथवा 3000 पी.पी.एम नीम की तेल की 20 मिली मात्रा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। रसायनिक प्रबंधन हेतु इमामेक्टिन बेन्जोएट की 5 एस.जी. की 0.2 ग्राम मात्रा अथवा प्रोपेनोफॉस 50 ई.सी. की 2 मिली अथवा रिनाक्सीपायर 20 एस.सी. की 0.15 मिली. मात्रा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

कंबल कीड़ा (बिहारी हेयरी केटर पिलर): इल्लियाँ पत्तियों को नुकसान पहुँचाती हैं। अधिक प्रकोप से फसल को अधिक नुकसान होता है। इसकी रोकथाम के लिए पैराथियान 2 प्रतिशत डस्ट का 25 किलो प्रति हेक्टेयर के हिसाब से भुरकाव करें। भुरकाव इल्लियों की आरम्भिक अवस्था में करें।

एफिड्स व जेसिड्स: इसके शिशु, वयस्क कोमल व नरम पत्तियों का रस चूसकर नुकसान पहुँचाते हैं। सफेद मक्खी विषाणुजनित पीत रोग का भी संचारण रोगी पौधों से स्वस्थ पौधों तक करती है। पूर्व के वर्षों में यदि इस कीट/रोग का प्रकोप हुआ हो तब थायोमेथोक्सेम 70 प्रतिशत की 3 ग्राम मात्रा द्वारा प्रति किग्रा बीज को उपचारित कर बुवाई करें।

सफेद मक्खी: यह कीट पौधों के कोमल भागों का रस चूसकर क्षति पहुँचाती है (शेष पृष्ठ 10 पर)

तरबूज की उन्नत खेती

• अभिषेक यादव • मनीषा पाठक
• रोहित कुमार यादव
(पीएचडी शोधार्थी) उद्यानिकी विभाग
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

गर्मी के दिनों में तरबूज एक अत्यन्त लोकप्रिय सब्जी मानी जाती है। इसके फल पकने पर काफी मीठे एवं स्वादिष्ट होते हैं। इसकी खेती हिमालय के तराई क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। इसके फलों के सेवन से लू नहीं लगती है तथा गर्मी से राहत मिलती है। इसके रस को नमक के साथ प्रयोग करने पर मूत्राशय में होने वाले रोगों से आराम मिलता है। इसकी खेती मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, कर्नाटक एवं राजस्थान में की जाती है।

जलवायु

गर्म एवं औसत आर्द्रता वाले क्षेत्र इसकी खेती के लिए सर्वोत्तम होते हैं। बीज के जमाव व पौधों के बढ़वार के लिए 25-32 डिग्री सेल्शियस तापक्रम उपयुक्त पाया गया है तथा पकने के समय उच्च तापमान सर्वोत्तम माना गया है।

भूमि की तैयारी

तरबूज की खेती विभिन्न प्रकार की भूमि में की जाती है। लेकिन बालुई मिट्टी इसकी खेती के लिए उपयुक्त होती है। तरबूज, कद्दू फल की सब्जियों में एक ऐसी सब्जी है जिसकी खेती 5 पी.एच. मान मृदा अम्लता पर भी सफलतापूर्वक की जाती है। भूमि का पी.एच. मान 5.5 से 7 तक होना चाहिए। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा बाद की जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से करते हैं। पानी कम या ज्यादा न लगे इसके लिए खेत को समतल कर लेते हैं। नदियों के किनारे बालुई मिट्टी में पानी की उपलब्धता के आधार पर नालियों एवं थालों को बनाया जाता है और नालियों या थालों को सड़ी हुई गोबर की खाद और मिट्टी के मिश्रण से भर देते हैं।

उन्नत किस्में

शुगर बेबी: इसकी बेलें औसत लम्बाई की होती हैं और फलों का औसत वजन 2 से 5 किलोग्राम तक होता है। फल का ऊपरी छिलका गहरे हरे रंग का और उन पर धूमिल सी धारियां होती हैं। फल का आकार गोल तथा गूदे का रंग गहरा लाल होता है। इसके फलों में 11.13 प्रतिशत टी.एस.एस.. होता है। यह शीघ्र पकने वाली प्रजाति है। बीज छोटेए भूरे रंग के होते हैं। जिनका शिरा काला होता है। औसत पैदावार 400-450 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म को पककर तैयार होने में लगभग 85-90 दिन लगते हैं।

दुर्गापुर केसर: यह देर से पकने वाली किस्म है, तना 3 मीटर लम्बे, फलों का औसत वजन 5-7 किलोग्राम, गूदे का रंग पीला तथा छिलका हरे रंग का व धारीदार होता है। बीज बड़े व पीले रंग के होते हैं। इसकी औसत उपज 350-450 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती हैं।

अर्का मानिक: इस किस्म के फल गोल, अण्डाकार व छिलका हरा जिस पर गहरी हरी धारियां होती हैं तथा गूदा गुलाबी रंग का होता है। औसत फल का वजन 6 किलोग्राम, मिठास 12-15 प्रतिशत एवं गूदा सुगन्धित होता है। फलों में बीज एक पंक्ति में लगे रहते हैं। जिससे खाने में काफी सुविधा होती है। इसकी भण्डारण एवं परिवहन क्षमता अच्छी है। यह चूर्णिल आसिता, मृदुरोमिल आसिता एवं एन्थेक्नोज रोग के प्रति अवरोधी है। औसत उपज 500 क्विंटल प्रति हेक्टेयर 110-115 दिन में प्राप्त की जा सकती है।

दुर्गापुर मीठा: इस किस्म का फल गोल हल्का हरा होता है। फल का औसत वजन 7-8 कि,ग्रा. तथा मिठास 11 प्रतिशत होती है। इसकी औसत उपज 400-500 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। इस किस्म को तैयार होने में लगभग 125 दिन लगते हैं।

काशी पीताम्बर: इसके फल गोल, अण्डाकार व छिलका पीले रंग का होता है तथा गूदा गुलाबी रंग का होता है। औसत फल वजन 2.5 से 3.5 कि.ग्रा. होता हैं औसत उपज 400-450 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

खाद एवं उर्वरक

खाद एवं उर्वरकों का उपयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करे। इसकी खेती के लिए लगभग 200-250 क्विंटल गोबर की खाद एवं 65 किग्रा नाइट्रोजन, 56 किग्रा फास्फोरस तथा 40 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से अवश्य दी जानी चाहिए। नत्रजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा खेत में नालियां या थाले बनाते समय देते हैं। नत्रजन की आधी मात्रा दो बराबर भागों में बाँटकर खड़ी फसल में जड़ों के पास गुड़ाई के समय तथा पुन: 45 दिन बाद छिड़ककर देना चाहिए।

बुवाई का समय

उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में तरबूज की बुआई 10-20 फरवरी के बीच में की जाती है, जबकि नदियों के किनारे इसकी बुआई नवम्बर-जनवरी के बीच में की जाती है। दक्षिणी-पश्चिमी राजस्थान में मतीरा जाति के तरबूज की बुवाई जुलाई महीने में की जाती है।

बीज की मात्रा

एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए 3.5-4.5 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है।

बुआई की विधि

तरबूज की बुआई मेड़ों पर 2.5 से 3.0 मीटर की दूरी पर 40 से 50 सेमी चौड़ी नाली बनाकर करते हैं। इन नालियों के दोनों किनारों पर 60 सेमी की दूरी पर बीज बोते हैं। यह दूरी मृदा की उर्वरता एवं प्रजाति के अनुसार घट बढ़ सकती है। नदियों के किनारे 60 गुणा 60 गुणा 60 सेमी क्षेत्रफल वाले गड्ढे बनाकर उसमें 1:1:1 के अनुपात में मिट्टी, गोबर की खाद तथा बालू का मिश्रण भरकर थालें को भर देवें तत्पश्चात् प्रत्येक थालें में दो बीज लगाते हैं।

सिंचाई

यदि तरबूज की खेती नदियों के कछारों में की जाती है तब सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि पौधों की जड़ें बालू के नीचे उपलब्ध पानी को शोषित करती रहती हैं। जब मैदानी भागों में इसकी खेती की जाती है इसमें सिंचाई 7-10 दिन के अन्तराल पर करते हैं। जब तरबूज आकार में पूरी तरह से बढ़ जाते हैं सिंचाई बन्द कर देते हैं, क्योंकि फल पकते समय खेत में पानी अधिक होने से फल में मिठास कम हो जाती है और फल फटने लगते हैं।

खरपतवार नियंत्रण

तरबूज के जमाव से लेकर प्रथम 25 दिनों तक खरपतवार फसल को ज्यादा नुकसान पहुँचाते हैं। इससे फसल की वृद्धि पर प्रतिकूल असर पड़ता है तथा पौधे की बढ़वार रूक जाती है। अत: खेत से कम से कम दो बार खरपतवार निकालना चाहिए। रासायनिक खरपतवारनाशी के रूप में बूटाक्लोर रसायन 2 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से बीज बुआई के तुरन्त बाद छिड़काव करते हैं। खरपतवार निकालने के बाद खेत की गुड़ाई करके जड़ों के पास मिट्टी चढ़ाते हैं जिससे पौधों का विकास तेजी से होता है।

तुड़ाई एवं उपज

तरबूज में तुड़ाई बहुत महत्वपूर्ण है। तरबूज के फल का आकार एवं डंठल के रंग को देखकर उसके पकने की स्थिति का पता लगाना बड़ा मुश्किल है। अच्छी प्रकार पके हुए फलों की पहचान निम्न प्रकार से की जाती है। जमीन से सटे हुए फल के भाग का रंग परिवर्तन देखकर (फल का रंग सफेद से मखनियां पीले रंग) किया जाता है। **(शेष पृष्ठ 13 पर)**

सुपर-वूमन अवॉर्ड 2025 में 'कोंडागांव मॉडल' की गूंज

गोंदिया में सशक्त महिलाओं का सम्मान, किसानों के लिए डॉ. राजाराम त्रिपाठी का बड़ा ऐलान

गोंदिया: विदर्भ, जहां किसानों की आत्महत्या की घटनाएं सबसे अधिक होती हैं, अब एक नई कृषि क्रांति का केंद्र बनने जा रहा है। मां दंतेश्वरी हर्बल फार्म में विकसित 'कोंडागांव मॉडल' को देश का सबसे सफल कृषि नवाचार बताते हुए डॉ. राजाराम त्रिपाठी ने घोषणा की कि इस मॉडल को अब विदर्भ में बड़े पैमाने पर लागू किया जाएगा। 'सुपर वूमन अवॉर्ड 2025' समारोह में बतौर मुख्य अतिथि उन्होंने कहा, ''विदर्भ के किसानों को आत्महत्या नहीं, आत्मनिर्भरता की जरूरत है। इसी उद्देश्य से हमने इस क्षेत्र को अपने नवीनतम कृषि प्रयोगों की भूमि बनाने का फैसला किया है।''

कोंडागांव मॉडल: कम लागत, अधिक आय और जलवायु संकट का समाधान

इस मॉडल के तहत ऑस्ट्रेलियाई काली मिर्च, हल्दी, सफेद मूसली, स्टीविया और अन्य औषधीय फसलों की मिश्रित खेती की जाती है। उन्होंने विशेष रूप से वृक्षों से निर्मित प्राकृतिक ग्रीनहाउस प्रणाली का उल्लेख किया, जो महंगे पॉलीहाउस का किफायती और प्रभावी विकल्प है। इस मॉडल को अपनाकर किसान अपनी आय में 3 से 4 गुना वृद्धि कर सकते हैं। यह मॉडल जैविक खाद की फैक्ट्री की तरह जैविक खाद का भारी मात्रा में उत्पादन करता है वाटर हार्वेस्टिंग करता है। उल्लेखनीय है कि देश के लगभग 16 राज्यों के लाखों किसान इसे अपने खेतों में सफलतापूर्वक अपना चुके हैं।

गोंदिया की सशक्त महिलाएं को 'सुपर वूमन अवॉर्ड 2025' से हुई सम्मानित :

इस भव्य समारोह में समाज सेवा, शिक्षा, स्वास्थ्य, साहित्य और महिला सशक्तिकरण में उत्कृष्ट कार्य करने वाली सविता विनोद अग्रवाल, पिंकी पारस कटकवार, सविता संजय पुराम, कल्याणी मोहरे (सरिता सरोज), यशोधरा सोनवाने, रजनी रामटेके, डॉ. शीतल रामादे, शालिनी बडोले, शालू कोल्हे, वर्षा बडगुजर और लता बाजपेयी को सम्मानित किया गया। इन महिलाओं ने शिक्षा, आदिवासी कल्याण, स्वास्थ्य सेवा, सामाजिक न्याय, जल संरक्षण, साहित्य और महिला आत्मनिर्भरता जैसे क्षेत्रों में अनुकरणीय योगदान दिया है।

महिलाओं ने दिखाया कला का जादू, लोग हुए सम्मोहित,

डांस प्रतियोगिता में एकता तिवारी, मनीषा माहुरे और रोहिणी तोमर को सोलो डांस श्रेणी में, पूजा मोहितकर-मंजू पटले को डुएट डांस में, और शबनम पठाण व उनकी टीम को ग्रुप डांस में प्रथम पुरस्कार मिला।

डॉ. राजाराम त्रिपाठी का हुआ विशेष-सम्मान तथा नागरिक अभिनंदन :

डॉ. राजाराम त्रिपाठी को भारतीय कृषि नवाचारों में उनके अतुलनीय योगदान के लिए विशेष रूप से नागरिक अभिनंदन किया गया तथा विशेष रूप से सम्मान-चिन्ह और प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा, ''कोंडागांव मॉडल विदर्भ के किसानों के लिए एक नया भविष्य रच सकता है।''

इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी मनीष श्रीवास्तव, युवा व्यवसायी प्रीतेश शुक्ला, गोंदिया पब्लिक स्कूल की संचालिका डॉ. इंदिरा सपाटे, महिला अर्बन बैंक की डायरेक्टर डॉ. माधुरी नासरे, वरिष्ठ समाजसेवी लक्ष्मण गुडधे, समाजसेविका सीमा डोये, सुपर वूमन समूह संचालक विवान मिश्रा, सुपर वूमन कार्यक्रम आयोजक प्राची गुडधे और प्रमोद गुडधे सहित कई गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन याशिका धामडे और नेहा पारधी ने किया, जबकि आभार प्रदर्शन सध्या डोंगरवार ने किया। आयोजन समिति में मीना टेंभरे, सुनीता ठाकुर, स्वाती साखरवाडे, आशा बेले, रेणुका कुंजाम, अंकिता बडगुजर, कल्पना गोरखे, सुषमा पिल्हारे, पिंकी मोटवानी, नीता शेंडे, नीतू पाराशर, समीक्षा पटले, शबनम पठाण, सुरेखा गायधने, हिमेश्वरी कावळे, सुषमा कारंजेकर, निधी उपरीकर, किरण उबराणी, संतोषी रहांगडाले, प्रमिला कुकडे और चेतना बावनथडे सहित कई महिलाओं ने अथक परिश्रम किया। 'सुपर वूमन अवॉर्ड 2025' न केवल महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण मंच बना, बल्कि इसने भारत के कृषि क्षेत्र में क्रांति लाने वाले 'कोंडागांव मॉडल' को भी राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दी। डॉ. राजाराम त्रिपाठी के प्रयास निश्चित रूप से विदर्भ के किसानों को आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करने में सहायक होंगे।

कृभको की किसान सभा आयोजित

देवास। त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय विधेयक 2025 के उपलक्ष्य में कृषक भारती कोआपरेटिव लिमिटेड देवास के द्वारा किसान सभा का आयोजन कृषक भारती सेवा केंद्र, देवास पर किया गया। कार्यक्रम मुख्य अतिथि बालाराम कुमावत जनपद सचिव, देवास विशेष अतिथि धर्मेन्द्र सिंह राजपूत म.प्र. शासन से सम्मानित प्रगतिशील किसान की उपस्थिति में आयोजित किया गया। इस अवसर पर लगभग 35 से अधिक किसान उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन लक्षमण सिंह सोनगरा सेल्स मेन केबीएसके सिया देवास के द्वारा किया गया।

क्षेत्रीय प्रतिनिधि उज्जैन राहुल पाटीदार द्वारा त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय विधेयक 2025 व कृभको संस्था की कार्य प्रणाली, संस्था द्वारा समितियों एवं किसानों के हित में किये जाने वाले कार्यक्रम एवं कृभको द्वारा विभिन्न उत्पाद जैसे- रायजो सुपर, तरल जैव उर्वरक, सिवारिका, प्राकृतिक पोटाश, जिंक सल्फेट आदि के विषय में विस्तृत चर्चा कर उनके उपयोग पर जोर दिया। साथ ही साथ उनसे होने वाले लाभों के विषय में चर्चा की। बालाराम एवं धर्मेन्द्र द्वारा क्षेत्र में खाद की सुगमतापूर्वक उपलब्धता के लिए कृभको को धन्यवाद दिया और कृभको के उत्पादों की सराहना की।

जिला स्तरीय कृषि मेला एवं प्रदर्शनी का आयोजन

किसानों को इफको उत्पादों व नैनो उर्वरको के बारे में जानकारी दी

रायसेन। कृषि विज्ञान केंद्र नकतरा में लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल, सांची विधायक डॉ. प्रभुराम चौधरी तथा जिला पंचायत अध्यक्ष यशवंत मीणा की उपस्थित में जिला स्तरीय कृषि मेला एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर जिला पंचायत की कृषि समिति के सभापति सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि, जिला पंचायत सीईओ अंजू पवन भदौरिया, उप संचालक कृषि दुष्यंत धाकड़, कृषि विज्ञान केंद्र प्रभारी डॉ. स्वनिल दुबे भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में नरेन्द्र शिवाजी पटेल तथा सांची विधायक डॉ. प्रभु राम चौधरी ने इफको नैनो यूरिया और नैनो डीएपी

के ड्रोन द्वारा छिड़काव एवं इससे होने वाले लाभों की चर्चा करते हुए किसानों से इसका अधिकाधिक उपयोग करने का आह्वान किया। कृषि विभाग व केवीके के वैज्ञानिकों से इसके सही उपयोग की जानकारी किसानों तक पहुंचाने के लिए कहा गया। इस अवसर पर इफको द्वारा कृषि प्रदर्शनी भी लगाई गई। मेले में आये 2000 से अधिक किसानों को इफको उत्पादों व नैनो उर्वरको के बारे में जानकारी दी गई।

स्टाल पर श्री पटेल एवं डॉ. चौधरी को संजीव सिंह क्षेत्र प्रबंधक इफको ने ड्रोन व नैनो उर्वरकों के बारे में जानकारी दी।

ACE ट्रैक्टर किसानों के बीच लोकप्रिय : श्री खनेजा

किसानों की आवश्यकता के अनुरूप ACE ट्रैक्टर

(राजेन्द्र राजपूत)

भोपाल। ट्रैक्टर उद्योग में तेजी से आगे बढ़ रही एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड (ACE) ट्रैक्टर म.प्र. एवं छग के किसानों के बीच वेहद ज्यादा पसंद किया जा रहा है। यह ट्रैक्टर खेती के सभी कार्यों के अलावा ढुलाई का भी सबसे बड़ा आल राउंडर है। एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड ACE ट्रैक्टर के चीफ जनरल मैनेजर सेल्स श्री रविन्द्र सिंह खनेजा ने बताया कि मप्र एवं छग के किसानों ने जो स्नेह दिया उसके लिए सभी किसान भाईयों का आभार व्यक्त किया। श्री खनेजा ने बताया कि ACE ट्रैक्टर सर्वाधिक लोकप्रिय है। ट्रैक्टर के विक्रय पश्चात किसानों को समुचित सर्विस देने पर कंपनी का पूरा फोकस रहता है।

उन्होंने बताया कि समय-समय पर डीलर्स एवं किसानों को कंपनी प्रशिक्षण सुविधा भी उपलब्ध करवाती है। श्री खनेजा ने बताया कि देशभर में कंपनी डीलर्स नेटवर्क बढ़ाने का अभियान चला रहा है। ACE किसानों को आधुनिक फीचर्स से युक्त स्वदेशी ट्रैक्टर उपलब्ध करवाने के प्रति वचनबद्ध है। मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के ACE डीलर्स भी किसानों

की विक्रय पश्चात समुचित सेवाएं उपलब्ध करवा रहे है। श्री खनेजा ने बताया कि ACE का प्रमुख उद्देश्य किसानों की स्थानीय जरूरत के मुताबिक ट्रैक्टर उपलब्ध करवाना है। वर्तमान में ACE ट्रैक्टर 25 हार्स पावर से 90 हार्स पावर श्रेणी के अन्तर्गत लगभग 70 वेरियन्ट में उपलब्ध है। श्री खनेजा ने

श्री रविन्द्र सिंह खनेजा
चीफ जनरल मैनेजर सेल्स

बताया कि हमारी कंपनी द्वारा ट्रैक्टरों का निर्माण फरीदाबाद स्थित अत्याधुनिक कारखाने में किया जाता है। ACE ट्रैक्टर कारखाने की उत्पादन क्षमता 15 हजार ट्रैक्टर वार्षिक है। वर्तमान में मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के किसानों को ACE ट्रैक्टर सबसे ज्यादा पसंद किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि ACE ट्रैक्टर सभी फीचर्स में तैयार किया गया है ताकि म.प्र. छग के किसानों को किसी प्रकार कि परेशानी न हो। किसानों द्वारा ACE ट्रैक्टर पसन्द हैं।

महाराष्ट्र के चीनी उत्पादन में 26 फीसदी की गिरावट

मुंबई। महाराष्ट्र में गन्ना पेराई सत्र समाप्ति के करीब है। चालू चीनी सीजन 2024-25 के दौरान राज्य का चीनी उत्पादन करीब 26 फीसदी कम है। राज्य में अभी तक महज 79.80 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ है, जबकि पिछले सीजन में इस समय तक 107.34 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ था। राज्य में चीनी का उत्पादन पांच साल के निचले स्तर पर पहुंच गया है जबकि रिकवरी दर में रिकॉर्ड गिरावट देखी जा रही है।

महाराष्ट्र में 2024-25 सीजन के लिए चीनी उत्पादन 798.08 लाख क्विंटल तक पहुंच गया है, जो पिछले साल इसी अवधि के दौरान उत्पादित 1073.37 लाख क्विंटल से कम है। 25 मार्च तक राज्य की मिलों ने पिछले सीजन के 1050.81 लाख टन की तुलना में 843.85 लाख टन गन्ने की पेराई की है। राज्य की कुल चीनी रिकवरी दर 9.46 फीसदी है, जो पिछले साल इसी अवधि के दौरान 10.21 फीसदी रिकवरी दर से कम है। इस साल की चीनी रिकवरी दर अब तक की सबसे कम दर है।

महाराष्ट्र में गन्ना पेराई सत्र 2023-24 में 110.50 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ है जबकि 2022-23 में 105.32 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ था।

सीजन 2021-22 में 137.36 लाख टन और 2020-21 में 106.40 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ था। महाराष्ट्र चीनी आयुक्तालय के मुताबिक सीजन 2023-24 में कुल मिलाकर 208 चीनी मिलों ने पेराई में भाग लिया था। जिसमें 104 सहकारी एवं 104 निजी चीनी मिलें शामिल थी। चीनी सीजन 2023-24 के दौरान चीनी मिलों में 1073.08 लाख टन गन्ने की पेराई की गई थी।

रबी फसल प्रदर्शन का आयोजन

रायसेन। मंथन ग्रामीण एवं समाज सेवा समिति, भोपाल एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन के संयुक्त तत्वाधान में आकांक्षी जिला विदिशा में क्रियान्वित बायोटेक किसान हब परियोजना के अंतर्गत ग्राम खेजड़ा हाली, खेजड़ा ऊदा, सावनखेड़ी, चांदवड़, नेवली, वमोरी, अमीरगंज, गोल खेड़ी, जावती आदि ग्रामों में कृषकों के खेत पर कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन द्वारा चना व मसूर की उन्नत किस्म आर.वी.जी.-202 एवं कोटा मसूर-1 किस्म का फसल प्रदर्शन आयोजित किया गया। फसल प्रदर्शन भ्रमण के दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन के वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख डॉ. स्वप्निल दुबे, वैज्ञानिक रंजीत सिंह राघव, डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी व मंथन संस्थान के भगवान सिंह किरार प्रमुख रूप से उपस्थित थे। कृषकों से चर्चा के दौरान डॉ. दुबे ने बताया कि उन्नत किस्म आर.वी.जी.-202 एवं कोटा मसूर-1 उक्ठा निरोधी किस्म हैं, सामान्यतः चना व मसूर में उक्ठा की समस्या अधिक देखी जाती है। इसके नियंत्रण के लिए फसल चक्र का उपयोग, नीम की खली मात्रा 75 किग्रा प्रति हेक्टेयर, चना व मसूर का बीजोपचार जैविक फफूंदनाशक ट्राइकोडर्मा विरिडी मात्रा 10 किग्रा प्रति किलो बीज की दर से उपयोग की सलाह दी गई।

जायद मूंग के लिये सर्वोत्तम पांच अमूल्य पौषक तत्वों वाला ग्रोप्लस

इंदौर। उर्वरक उद्योग की अग्रणी कंपनी कोरोमंडल इन्टरनेशनल लिमिटेड के प्रमुख उत्पाद ग्रोप्लस के चमत्कारिक परिणाम से किसान अभिभूत हैं। ग्रोप्लस खाद्यान्न फसलों के साथ ही दलहनी एवं तिलहनी फसलों के लिये भी लाभकारी है।

जिन किसानों ने जायद मूंग की फसल में ग्रोप्लस का उपयोग किया है उन्हें बेहतरीन उत्पादन मिला है। ग्रोप्लस में पांच अतिरिक्त अमूल्य पौषक तत्व होने से मूंग की गुणवत्ता के साथ ही उत्पादन भी बढ़ता है। ग्रोप्लस की आधुनिकतम निर्माण तकीनीकी फसल के लिए फास्फोरस को अधिक सुलभ बनाता है। ग्रोप्लस मूंग की फसल के लिए न केवल प्रमुख पोषक तत्व प्रदान करता है, बल्कि द्वितीयक और सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे कैल्शियम सल्फर, बोरान और जस्ता भी प्रदान करता है। ग्रोप्लस मिट्टी की गुणवत्ता और पीएच में सुधार लाता है। ग्रोप्लस जड़ तंत्र में पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाता है। ग्रोप्लस अन्य उर्वरकों के साथ संयोजन में आसानी से उपयोग किया जा सकता है। ग्रोप्लस अधिक समय तक संगृहित किया जा सकता है।

एन फॉस तकनीक

अब ग्रोप्लस आ गया है उन्नत एन फॉस तकनीक के साथ जो अधिक फॉस्फोरस उपलब्धता सुनिश्चित करे, जिससे बेहतर फसल वृद्धि और उपज प्राप्त होती है। एन फॉस तकनीक से पौषक तत्वों का बेहतर अवशोषण होता है जिससे फसल की उपज अधिकतम होती है। ग्रोप्लस एक विशेष तकनीक से तैयार किया गया है जो फसल को फास्फोरस के अलावा सल्फर, कैल्शियम, बोरान और जस्ता (जिंक) जैसे प्रमुख सूक्ष्म पौषक तत्व प्रदान करता है।

सभी फसलों के लिये ग्रोप्लस सबसे अच्छा खाद क्यों है?

- ग्रोप्लस की आधुनिक एन फॉस तकनीक फसल के लिये फास्फोरस को अधिक सुलभ बनाती है।
- ग्रोप्लस न केवल प्रमुख पौषक तत्व प्रदान करता है, बल्कि द्वितीयक और सूक्ष्म पौषक तत्व जैसे कैल्शियम, सल्फर, बोरान, और जस्ता भी प्रदान करता है।
- मिट्टी की गुणवत्ता और पीएच में सुधार लाता है।
- जड़ तंत्र में पौषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ता है।
- अन्य उर्वरकों के साथ संयोजन में आसानी से उपयोग किया जा सकता है।
- अधिक समय तक संगृहित किया जा सकता है।

डीएपी की तुलना में ग्रोप्लस बेहतर क्यों है

फॉस्फोरस का महत्व : ग्रोप्लस में मौजूद 16 प्रतिशत फॉस्फोरस जड़ों को मजबूत और विकसित करता है। शाखायें अधिक फूटती हैं, तना पुष्ट और चमकदार होता है, फूल, फली और बीजों की संख्या में वृद्धि करता है और फसल को शीघ्रता से पकने में मदद करता है।

कैल्शियम का महत्व : ग्रोप्लस के 19 प्रतिशत कैल्शियम से नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटेशियम जैसे उर्वरकों की उपयोग दक्षता में वृद्धि करता है, नई कोशिकाओं के निर्माण और विस्तारण में मदद, क्षारीयता को उदासीन कर मृदा सुधारक का भी काम करता है।

सल्फर का महत्व : ग्रोप्लस का 11 प्रतिशत सल्फर फसल को ठण्ड और बीमारियों से लड़ने में सक्षम बनाता है। हरितलवकों के निर्माण के लिए सल्फर महत्वपूर्ण है। मूंग में प्रोटीन की मात्रा बढ़ाता है। फसल उत्पादन में 15 से 20 प्रतिशत की वृद्धि करता है। मिट्टी को भुरभरा बनता है।

जिंक का महत्व : ग्रोप्लस का 0.5 प्रतिशत जिंक मूंग की फसल में प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट के निर्माण में सहायक, फसल में फुटान को बढ़ाता है। बीज निर्माण व पकने में सहायक, फसल को हरा-भरा और तंदुरस्त रखता है।

बोरोन का महत्व : ग्रोप्लस के 0.2 प्रतिशत बोरोन से अग्रप्ररोहो और पत्तियों के विकास में सहायक, फूलों में निषेचन, फल और बीज के निर्माण में महत्व की भूमिका निभाता है।

खुराक को पत्तों से फलों तक पहुंचने में सहायक, दलहनी फसल की जड़ों में नत्रजन स्थरीकरण ग्रंथियों के निर्माण में सहायक होता है। कोरोमण्डल का एन फॉस तकनीक युक्त ग्रोप्लस कंपनी के प्रमुख डीलर्स के पास उपलब्ध है।

भेड़-बकरी एवं शूकर की आवास व्यवस्था

- डॉ. विवेकिन पचौरी
- डॉ. सुशील कुमार मिश्रा
- डॉ. विकास गुप्ता
- डॉ. ओ.पी. भारती

कृषि विज्ञान केन्द्र, सागर (म.प्र.)

भेड़-बकरी की आवास व्यवस्था :- पशु की उपयोगिता के आधार पर उनकी आवास व्यवस्था निश्चित की जानी चाहिए तात्पर्य की ऊन व मांस के लिए पाली जा रही भेड़, मांस के लिए पाली जा रही बकरी एवं दूध हेतु पाली जा रही बकरियों के आवास सूखे व थोड़ा ऊचे स्थान पर रखा जाना चाहिए जहां से पानी का निकास अच्छा हो तथा स्थान गर्म हवा व ठंडी हवा से सुरक्षित हो। छायादार स्थान उन पशुओं के लिए अच्छा होता है।

बाड़े की दीवारें : उत्तर से दक्षिण होना चाहिए इंडियन स्टैण्डर्ड कोड आफ प्रैक्टिस फार सीप एण्ड गोट हाउसिंग 1986 के आधार पर इन पशुओं के लिए आवश्यक स्थान तालिका के अनुसार होनी चाहिए।

तालिका 1 भेड़ बकरी के लिए आवश्यक स्थान (वर्ग मी.)

पशु	समूह के	सिंगल
राम (बकरा) मेढ़ा	1.8	3.2
मेमना	0.4	3.2
वीनर	0.8	1.0
एक वर्षीय पशु	09	1.2
भेड़ बकरी	-	1.2

भेड़ बकरी प्रक्षेत्र के लिए आवश्यक भवन एवं शेड :- डेरी फार्म की भांति भेड़-बकरी में भी भवन व रोड की निम्नानुसार आवश्यकता होती है।

भेड़/बकरी का शेड :- प्रजनन हेतु पाली जा रही मादा पशुओं का शेड 15×4 मी. आकार व 3 मी. ऊंचाई वाला बनाया जाना चाहिए। इस शेड में अधिक से अधिक 60 मादा पशुओं को रखा जा सकता है।

मेढ़ा/बकरा शेड :- प्रजनन हेतु रखे गए नर के लिए 4×2.5 मी. आकार एवं 3 मी. ऊंचाई के शेड बनाए जाने चाहिए। इस शेड में 3 नर पशु रखे जा सकते हैं। आपसी लड़ाई की संभावना हो तो इस बाड़े को तीन हिस्सों में विभाजित करके चेनलिंक फेसिंग (4 फीट ऊंची) लगा देनी चाहिए।

प्रसव कक्ष :- इस कक्ष का आकार 1.5×1.2 मी. एवं ऊंचाई 3 मी. रखी जानी चाहिए। कक्ष में पानी का छोटा ट्रफ रख देना चाहिए। प्रसव कक्ष में सूखी घास की शैय्या अवश्य दी जानी चाहिए।

नवजात कक्ष या नर्सरी :- साढ मादाओं से उत्पन्न मेमनों दोनों को वीनिंग पूर्व रखने के लिए 7.5×4 मी. आकार व 3 मी. ऊंचाई के 5 शेड पर्याप्त होते हैं। इसमें 75 पशु रखे जा सकते हैं। इन बाड़ों की चौड़ाई में विभाजित कर उनके बड़े हिस्से अर्थात 5×4 मी. वाले भाग में नवजातो को तथा 25×4 मी. वाले में वीनिंग पश्चात मेमनों दोनों को रखा जाना चाहिए। नर्सरी में सूखी शैय्या अवश्य दी जानी चाहिए।

रोगी पशु का शेड :- इन शेड का आकार 3×2 मी. व ऊंचाई 3 मी. होनी चाहिए। इस कक्ष में चौड़ी दीवार और एक मी. चौड़ा व 2 मी. ऊंचा लकड़ी का दरवाजा तथा 1.2×0.7 मी. आकार की जालीदार खिड़की होनी चाहिए।

ऊन कतरण व ऊन भंडारण कक्ष :- इस कार्य के लिए 6×2.5 मी. आकार व 3 मी. ऊंचाई वाला कक्ष बनाया जाना चाहिए। इस कक्ष के सामने की और 2×1 मी. का एक लकड़ी का दरवाजा तथा 1.2×0.7 मी. की जालीदार खिड़की होना चाहिए। ऊन वितरण शेड के सामने व पीछे 30 भेड़ों के लिए बाड़ा बनाया जाना चाहिए ताकि उनमें कतरण पश्चात भेड़ों को रखा जा सके।

दुधारू बकरियों का शेड :- दुधारू बकरियों के लिए स्टाल की दो कतारें जिनके बीच में आने-जाने का रास्ता हो बनाकर रखी जा सकती है एक स्टाल में एक बकरी सूखी जाती प्रत्येक स्टाल 1.4×1.2 आकार का होता है। शेड में हे रैक या हरा घास डालने की

शूकर आवास हेतु आवश्यक धरातल (स्थान) एवं आहार और पानी के ट्रफ

पशु श्रेणी	आवश्यक स्थान/पशु वर्ग मी.		पानी व आवास के ट्रफ की लंबाई× चौड़ाई से.मी.
	बंद क्षेत्र	खुला क्षेत्र	
नर शूकर	6.25-7.50	8.8-12.0	60-75×50
ब्यायी शूकरी	7.5-9.0	8.8-12	60-75×50
वीनर	0.96-1.8	8.8-12	25-35×50
शूष्क मादा	1.8-2.7	1.4-1.8	60-75×50

व्यवस्था बनाई जानी चाहिए। दुधारू बकरियों के फार्म पर दूध भंडारण एवं पशु आहार के भंडारण हेतु अलग कक्ष होना चाहिए।

शूकर आवास व्यवस्था :- शूकर पालन वाले स्थान का चुनाव करना चाहिए किन्तु वह स्थान काली/चिकनी मिट्टी वाला नहीं होना चाहिए। शूकर आवास मनुष्य के घर एवं फैक्ट्री आदि से 15 मी. डेरी फार्म कुक्कुट फार्म एवं आवास भण्डारों से 30 मी. पशु वह ग्रह शोधक केन्द्र व शहरी कचरा फेंकने के स्थान से कम से कम एक कि.मी. दूर बनाया जाना चाहिए, शूकर फार्म की बाहरी सीमा से मुख्य सड़क के बीच कम से कम 50 मी. का अंतर रखा जाना चाहिए। विभिन्न आयु के शूकरों के लिए आवश्यक धरातल के अनुसार होना चाहिए।

शूकर प्रक्षेत्र के लिए आवश्यक भवन एवं शेड :- पशुओं को उनकी आयु एवं उपयोगिता के अनुसार एक अथवा अलग-अलग शेड में रखा जाता है। शूकर आवास को स्टाई कहते हैं शूकर फार्म में भी निम्न भवन होने चाहिए।

नर शूकर बाड़ा :- एक बोर स्टाई में एक नर रखा जाता है तथा एक क्षत के नीचे अधिकाधिक 24 पशुओं को रखा जाना चाहिए।

शुष्क गर्भिणी मादा का बाड़ा :- एक छत के नीचे अधिकाधिक 40 बाड़े बनाए जा सकते हैं। प्रत्येक बाड़े में 2.5 या 10 मादाओं को उनकी गर्भावस्था के अनुसार समूह बना करके रखना चाहिए। यह बाड़े दो में बनाए जाने चाहिए।

मांसदायी शूकरों का बाड़ा :- एक छत के नीचे अधिकाधिक 20 बाड़े बनाए जा सकते हैं तथा एक बाड़े में 16-32 शूकर रखे जा सकते हैं।

रोगी शूकर का बड़ा :- कुल पशुओं की संख्या का 5 प्रतिशत की दर से यह बाड़े बनाए जाते हैं। रोगी शुकर का बाड़ा भी स्वास्थ्य पशु से दूर रखा जाना चाहिए। **(शेष पृष्ठ 13 पर)**

(पृष्ठ 6 का शेष)

उड़द की वैज्ञानिक ...

तथा पीत विषाणु रोग के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करती है। सफेद रंग का यह कीट पत्तियों की निचली सतह पर रहकर रस चूसती है। इस कीट के प्रबंधन हेतु रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर गाड़ दें या जला दें। इनके रासायनिक प्रबंधन हेतु इमिडाक्लोप्रिड-17.8 एस.एल की 0.2 मिली. प्रति लीटर अथवा एसीफेट-75 एस.पी. की एक ग्राम मात्रा का प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें अथवा नीम के तेल (3000 पी.पी.एम) की 20 मिली. प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

प्रमुख बीमारियां

सर्कोस्पोरा पर्णधब्बा रोग: यह रोग सर्कोस्पोरा कैनीसेन्स नामक फफूंद से फैलता है। संक्रमित पत्तियों पर भूरे से लेकर हल्के हरे रंग के धब्बे बनते हैं जिनके किनारे रक्ताव भूरे रंग के होते हैं। अनूकूल अवस्था में रोग के लक्षण तना, पर्णवृन्त एवं फलियों पर भी देखे जा सकते हैं। अधिक संक्रमण में पत्तियाँ झड़ जाती हैं। इनके प्रबंधन हेतु बीजों को बुवाई से पूर्व थीरम+कार्बेन्डाजिम (2:1) की 3 ग्राम मात्रा से प्रति किलो बीज को उपचारित कर बुवाई करें। पौधों पर रोग के लक्षण दिखाई देते ही कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी. की 0.1 प्रतिशत अथवा मैन्कोजेब 45 डब्ल्यू.पी. की 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।

पीत शिरा रोग: विषाणु जनित पीत शिरा रोग (येलो मोजेक) का प्रकोप उड़द की फसल में प्रमुखता से होता है। जिससे 50 से 90 प्रतिशत तक उपज में कमी होती है। रोग के लक्षण वुवाई के 4-5 सप्ताह बाद दिखने लगते है सर्वप्रथम पत्तियों पर गोलाकार पीले रंग के धब्बे दाने के आकार के बनते है जो धीरे-धीरे बढ़कर हरे पीले से चकत्तों के रूप में बदल जाते है तथा धीरे-धीरे पूरी पत्ती पीली पड़ कर सूख जाती है। रोग का प्रसारण सफेद मक्खी नामक रसचुसक कीट द्वारा होता है। रोग नियंत्रण हेतु प्रतिरोधी जातियों खेत में खरपरवार सहित रोगी पौधों को समय समय पर निकालकर नष्ट करें व वाहक कीट सफेद मक्खी से बचाव हेतु बीज का इमिडाक्लोप्रिड 600 (48 प्रतिशत) अथवा थायोमेथोक्सिम 70 डब्ल्यू.पी. 3 ग्राम मात्रा द्वारा प्रति कि.ग्रा. की दर से उपचारित कर बोयें एवं आवश्यकता पड़ने पर एसिटामिप्रिड या इमिडाक्लोप्रिड की 100 मिली ग्राम या थायोक्लोप्रिड 21.7 एस.सी. की 300 मि.ली. मात्रा प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें।

भभूतिया रोग: इस रोग के कारण पत्तियों पर सफेद रंग का पाउडर जमा हो जाता है नियंत्रण हेतु घुलनशील गंधक की 500 ग्राम मात्रा 200 लीटर पानी में अथवा 100 ग्राम कार्बेन्डाजिम को 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

श्याम वर्ण रोग: इस रोग में सर्वप्रथम पत्तियों पर गोलाकार भूरे धसे हुये धब्बे बनते हैं। जिनके मध्य भाग गहरे एवं किनारे हल्के रंग के होते हैं। अनुकूल वातावरण में इस रोग का संक्रमण पौधे के समस्त वायुवीय भाग पर देखे जा सकते हैं। पत्तियों के संक्रमित धब्बे सूख करगिर जाते हैं जिससे पत्तियों पर छिद्र बन जाते हैं। इस रोग के प्रबंधन हेतु बीजों को बुवाई से पूर्व कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी. की 2 ग्राम मात्रा अथवा थायरम+कार्बेन्डाजिम (2:1) की 3 ग्राम मात्रा अथवा कार्बाक्सिन (बीटावेक्स पावर) की 2 ग्राम मात्रा से प्रति किलो बीज को उपचारित कर बुवाई करें। रोग का संक्रमण दिखाई देते ही पौधों पर कार्बेन्डाजिम की 50 डब्ल्यू.पी. की 0.1 प्रतिशत अथवा हेक्साकोनाजोल की 0.1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।

कटाई गहाई एवं उपज

जब 70-80 प्रतिशत फलियाँ पक जाये तब कटाई आरम्भ करें। फसल को खलिहान में 3-4 दिन तक सुखाकर गहाई करें। इस प्रकार उन्नत तरीके से खेती करने पर 10-12 क्विंटल उपज प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है। फल्लियां गुच्छों में लगती है तथा अधिकांश प्रजातियों में फल्लियां एक साथ नहीं पकती अत: 2-3 बार तोड़ाई पर पूरी फसल की फल्लियां तोड़ ली जाती हैं। उड़द के दानों को बैल चलाकर या डंडे से पीटकर अलग किया जाता है। भूसे से दानों को हवा द्वारा अलग करके अच्छी तरह साफ कर सुखाने के बाद ही भंडारण करते हैं। उन्नत सस्य क्रियाएं व पौध संरक्षण अपनाने पर 10-12 क्विंटल उड़द प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है। इस प्रकार 60 से 75 दिन में एक एकड़ क्षेत्र में 7000-8000 रुपये लागत आने पर 15000-18000 की शुद्ध आय होतीहै।

● डॉ. अल्पना शर्मा ● डॉ. मृगेन्द्र सिंह
● डॉ. बी.के. प्रजापति
● श्री दीपक चौहान
● श्री ऋषिराज नेगी
● श्री भागवत प्रसाद पेन्द्रे
कृषि विज्ञान केन्द्र, शहडोल (म.प्र.)

अलसी की पोषण गुणवत्ता

अलसी या तीसी समशीतोष्ण प्रदेशों का पौधा है। इसे हम प्लेक्स सीड्स भी कहते हैं। अलसी का बोटेनिकल नाम लाईनम उसीटेटिसिमम है । यह परिवार लिनेसी के जीनस लिनम का एक सदस्य हैं। विश्व में अलसी के उत्पादन के दृष्टिकोण से हमारे देश का तीसरा स्थान है। इसकी खेती मुख्यतः मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हिमाचल प्रदेश एवं महाराष्ट्र आदि राज्यों मंख की जाती है।

अलसी बीज छोटे, सुनहरे, भूरे रंग के होते हैं। अलसी में कई ऐसे पोषक तत्व होते हैं, जो मानव शरीर के लिए स्वास्थ्यवर्धक हैं। ये अल्फा-लिनोलेनिक एसिड या ए एल ऐ (ओमेगा -3 फैटी एसिड कि पौधे पर आधारित हैं) के सबसे अमीर स्रोत होने के लिए जाने जाते हैं और इसलिए किसी के आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकता हैं। वे लिग्नन्स में भी बहुत समृद्ध हैं, जिससे यह बीज भोजन के लिए एक बहुत ही मूल्यवान होता है। इसके विभिन्न स्वास्थ्य लाभ हैं और नियमित और सही तरीके से सेवन करने पर यह कई फायदे पहुंचाता है। यह उच्च फाइबर सामग्री और कम कार्बोहाइड्रेट होने के लिए जाना जाता है।

यह स्वस्थ त्वचा और बालों, वजन घटाने, कोलेस्ट्रॉल के कम करने और पाचन स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। यह ग्लूटेन मुक्त है, ओमेगा-3 फैटी एसिड में समृद्ध है। इसमें उच्च मात्रा में एंटीऑक्सिडेंट मौजूद हैं। रजोनिवृत्ति के लक्षणों के साथ मदद करता है और मासिक धर्म चक्र को नियंत्रित करता है और यहां तक कि कुछ प्रकार के कैंसर को रोकने में मदद करता है। यही कारण है कि अलसी को सुपरफूड भी कहा गया है। अलसी पहला सुपरफूड है जिसे उगाया और खाया गया है। अलसी का उपयोग मुख्यत: तेल, रेशे, लिनन और अन्य फाइबर के उत्पादन के लिए किया जाता है।

अलसी का बीज का पौषणिक मूल्य

इस सुपरफूड से कई महत्वपूर्ण पोषक तत्व प्राप्त होते हैं। 100 ग्राम अलसी से 534 कैलोरी मिलती है। इसमें मौजूद कुल वसा 42 ग्राम है, जिसमें से संतृप्त वसा का 3.7 ग्राम, पॉलीअनसेचुरेटेड वसा का 29 ग्राम और मोनोअनसैचुरेटेड वसा का 8 ग्राम है। इसमें कोलेस्ट्रॉल का 0 मिलीग्राम होता है। 100 ग्राम अलसी में 30 मिलीग्राम सोडियम और 813 मिलीग्राम पोटेशियम भी होता है। कुल कार्बोहाइड्रेट की मात्रा 29 ग्राम है जिसमें 27 ग्राम आहार फाइबर मौजूद है और 1.6 ग्राम चीनी है। इसमें 18 ग्राम प्रोटीन, और कैल्शियम की दैनिक अनुशंसित खुराक का 25 प्रतिशत, विटामिन सी का 1 प्रतिशत, लोहा का 31 प्रतिशत, विटामिन बी-6 का 25 प्रतिशत और मैग्नीशियम 98 प्रतिशत की प्रचुर मात्रा होती है।

अलसी का बीज के औषधीय गुण और फायदे

एंटी-ऑक्सीडेंट्स

भरपूर मात्रा में ओमेगा-3 फैटी एसिड मौजूद होने से अलसी हमारे शरीर के इम्यून सिस्टम को मजबूत करता है और हमारे शरीर को कई बीमारियों से बचाता है। अलसी के बीज में पाएं जाने वाले एंटी-ऑक्सीडेंट्स शरीर के वजन को कम करने में सीधे तौर पर जुड़े हुए नहीं हैं, लेकिन जब शरीर में फैट बर्न होता हैं, तब ये शरीर के सेल की सक्रियता में सुधार लाता है और पोषण प्रदान करता है। ओमेगा-3 के अलावा अलसी का दूसरा महत्वपूर्ण एंटी-ऑक्सीडेंट्स लिग्नेन है। अलसी में इसकी मात्रा 0.8 से 12.0 मि.ग्रा. ग्राम होती है। यह एंटीबैक्टेरियल, एंटीवायरल, एंटीफंगल तथा कैंसररोधी है। एंटीऑक्सीडेंट लिग्नेन शरीर में ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रित करता है। लिगनेन चयापचय (मेटाबॉलिज्म) को बढ़ाता है, जिस कारण वजन कम होता है। अलसी में मौजूद लिग्नांस के कारण कैंसर ट्यूमर घटता है। ओमेगा-3 के कारण नसों की काम करने की क्षमता बढ़ती है।

हाई फाइबर, लो कार्बोहाइड्रेट

अलसी में हाई फाइबर और लो कार्बोहाइड्रेट होता है, जो वजन कम करने के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। अलसी के बीज को खाद्य फाइबर का एक बड़ा स्रोत माना जाता हैं। इसमें मौजूद फाइबर पाचन क्रिया को संयमित रखती है और एक प्राकृतिक लैक्सेटिव (रेचक) है। ये फाइबर मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं घुलनशील और अघुलनशील। घुलनशील फाइबर जैल पदार्थ का उत्पादन करने में मदद करते हैं जिससे पाचन क्रिया धीमी होती हैं और आपका पेट भरा-भरा लगता हैं। वहीं दूसरी ओर, अघुलनशील फाइबर अच्छे बैक्टेरिया के उत्पादन में मदद करते हैं, जिससे पाचन तंत्र स्वस्थ बना रहता हैं और मेटाबॉलिज्म भी ठीक रहता है। इसमें स्टार्च और चीनी की मात्रा कम होती हैं और इसमें कैलोरी भी बेहद कम होती हैं।

स्वस्थ त्वचा और बालों को बढ़ावा देता है

बालों, त्वचा और नाखूनों को बेहतर बनाने के लिए अपने दैनिक आहार में अलसी को शामिल करना का एक तरीका यह है कि अपने नाश्ते में केवल 2 बड़े चम्मच अलसी जोड़े। अलसी वसा जो अलसी के बीज में मौजूद होते हैं, आपकी त्वचा और बालों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करते हैं क्योंकि इसमें आवश्यक वसा और बी-विटामिन होते हैं जो परतदारपन और सूखापन को कम करने के लिए जाने जाते हैं। यही वह दो गुण जो त्वचा और बालों में अत्यधिक अवांछित होते हैं। अलसी के तेल (जो कि पूरी तरह से कार्बनिक है) त्वचा के लिए मॉइस्चराइजर का काम करता है।

वजन घटाने में सहायक होता है

अलसी के बीज मोटापे को रोकने और प्रबंधित करने और स्वस्थ वजन घटाने के लिए जाना जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अलसी में उच्च मात्रा में स्वस्थ वसा और फाइबर होते हैं, जो अन्य खाद्य पदार्थों की तुलना में लंबे समय तक संतुष्ट और पूर्ण महसूस कराते हैं। अत: इसके सेवन से जल्दी भूख लगने और अधिक कैलोरी का सेवन करने की संभावना बहुत कम हो जाती है। इसके अलावा वसा की सूजन को कम करने में मदद के लिए जाना जाता है। पीसे हुए अलसी के बीज स्वस्थ वजन घटाने में मदद करते हैं। यह सलाद या सूप के साथ भी लिया जा सकता है।

कोलेस्ट्रॉल को कम करता है

रक्त में खराब कोलेस्ट्रॉल की उच्च मात्रा होना चिंता का कारण हो सकता है क्योंकि इससे धमनियों में अकड़न, हृदय रोग और स्ट्रोक हो सकते हैं। अलसी शरीर में समग्र कोलेस्ट्रॉल को कम करती है। अलसी के बीज की फाइबर सामग्री जो घुलनशील होती है, पाचन तंत्र के भीतर कोलेस्ट्रॉल और वसा को कम सकती है और इसे शरीर द्वारा अवशोषित होने से रोकती है। यह इसी तरह से पित्त को भी कम करती है, जो बहुत अच्छा है क्योंकि पित्त कोलेस्ट्रॉल से बना होता है जो पित्ताशय में मौजूद होता है। यह फंसे हुए पित्त को पाचन तंत्र के माध्यम से स्वाभाविक रूप से उत्सर्जित किया जाता है, जो तब शरीर को इसका अधिक उत्पादन करने के लिए मजबूर करता है। अत: रक्त में मौजूद अतिरिक्त कोलेस्ट्रॉल का उपयोग किया जाता है, जो रक्त में समग्र कोलेस्ट्रॉल को कम करता है।

लस मुक्त होता है

इन दिनों अधिकांश स्वस्थ आहार लस मुक्त सामग्री को बढ़ावा देते हैं। अलसी के बीज अनाज के लिए एक बढ़िया विकल्प है जिसमें ग्लूटेन होता है, जैसे कि गेहूं। यह उन लोगों के लिए आदर्श है जिन्हें ग्लूटेन से एलर्जी है या सीलिएक रोग है। जिन लोगों को समुद्री भोजन से एलर्जी है, उनके लिए ओमेगा-3 वसा को शरीर में लाने के लिए अलसी के बीज को एक बढ़िया वैकल्पिक तरीका माना जा सकता है।

पाचन स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है

आहार में शामिल होने पर अलसी शरीर में बहुत कुछ जोड़ सकती हैं क्योंकि यह बेहतर पाचन स्वास्थ्य को बढ़ावा देता हैं। अलसी में मौजूद ऐ एल ऐ पाचन तंत्र के अस्तर की सुरक्षा करता है और बेहतर जठरांत्र संबंधी स्वास्थ्य को बनाए रखता है। यह उन लोगों के लिए काफी अच्छा है जो क्रोहन रोग से पीड़ित हैं या मुख्य रूप से आंत से संबंधित कोई अन्य बीमारी है क्योंकि यह इसकी सूजन को कम करने में मदद करता है। अलसी में उच्च मात्रा में अघुलनशील और घुलनशील फाइबर होते हैं जो पाचन तंत्र के लिए बहुत अच्छा होता है और इसमें उच्च मात्रा में मैग्नीशियम भी होता है। यह पेरिस्टलसिस, संकुचन और आंत में मांसपेशियों को खोलने के द्वारा कब्ज से राहत देने में मदद कर सकता है।

कैंसर से लड़ता है

अलसी के बीज को कोलोन, डिम्बग्रंथि, प्रोस्ट्रेट और स्तन कैंसर से लड़ने के लिए जाना जाता है और इसलिए यह भोजन में शामिल करने के लिए एक अद्भुत भोजन है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अलसी में तीन महत्वपूर्ण लिग्नान पाए जाते हैं जो आंतों में बैक्टीरिया द्वारा एंटरोलैक्टोन और एंटरोडिओल में परिवर्तित हो जाते हैं। ये प्राकृतिक तरीके से हार्मोन को संतुलित करते हैं और स्तन कैंसर की घटना को कम करने के लिए जिम्मेदार होते हैं। अलसी में पाए जाने वाले लिग्नान को एंडोमेट्रियल और डिम्बग्रंथि के कैंसर की घटना को कम करने के लिए भी जाना जाता है।

रजोनिवृबि के लक्षणों के साथ मदद करता है

अलसी में मौजूद लिग्नान महिलाओं को रजोनिवृत्ति के लक्षणों का प्रबंधन करने में मदद करते हैं। यह हार्मोन थेरेपी के लिए उपयोग करने के लिए एक महान वैकल्पिक भी हैं क्योंकि इसमें एस्ट्रोजेनिक गुण हैं। ये एस्ट्रोजेनिक गुण ऑस्टियोपोरोसिस के जोखिम को भी कम कर सकते हैं। अलसी के बीज उन महिलाओं के लिए बहुत अच्छा है जो अभी भी अपने मासिक धर्म चक्र में है। यह चक्र को विनियमित करने में मदद करता हैं।

अलसी का उपयोग

अलसी तेल का उपयोग खाने, औषधि उपयोग एवं अन्य विभिन्न प्रकार के औद्योगिक उत्पाद बनाने में किया जाता है। इसकी खली का उपयोग पशुओं को खिलाने के रूप में किया जाता है, जो कि खाने में स्वादिष्ट तथा 36 प्रतिशत प्रोटीन के साथ सुपाच्य भी होती है। अलसी में म्यूसिलेज भी पाया जाता है। म्यूसिलेज एक चिपचिपा, जैल जैसा फाइबर होता है। अलसी म्यूसिलेज से गोंद का निर्माण भी किया जाता है। खाद्य प्रक्रिया में इस गोंद का स्टेबलाइजर के रूप में उपयोग किया जाता है। अलसी चूर्ण का उपयोग स्मूदी, मिल्कशेक, कुकीज या केक में किया जाता है।

अलसी के बीज का उपयोग

इसको गेहूं और अन्य अनाजों के विकल्प के रूप और बेकिंग में इस्तेमाल किया जा सकता है जो लस मुक्त नहीं हैं। चिकित्सकीय रूप से, अलसी का उपयोग गले में खराश, श्वसन पथ में संक्रमण और खांसी के इलाज के लिए किया जा सकता है। इसका उपयोग ल्यूपस वाले रोगियों में गुर्दे की समस्याओं के इलाज के लिए किया जाता है। यह अवसाद और एडीएचडी में भी मदद करता है। यह दवाओं में भी उपयोग किया जाता है जो संधिशोथ, मलेरिया और मूत्राशय के संक्रमण का इलाज करते हैं। जो लोग एक्जिमा, मुँहासे, फोड़े, जलन का इलाज करना चाहते हैं, उनके द्वारा भी त्वचा और सूजन पर अलसी लगाया जा सकता है।

फ्रूट एवं वेजिटेबल प्रोसेसिंग यूनिट का शुभारंभ

ग्वालियर। कला, कौशल, चतुराई, युक्ति, शिल्प का अर्थ है किसी चीज को अच्छी तरह से निष्पादित करने की क्षमता। कला से तात्पर्य व्यक्तिगत, अविश्लेषणीय रचनात्मक शक्ति से है। कौशल तकनीकी ज्ञान और दक्षता पर जोर देता है। कौशल वह है, जो व्यक्ति को किसी भी काम को बेहतर तरीके से करने में सक्षम बनाता है। हालांकि, कौशल किसी भी व्यक्ति में जन्म के साथ से ही नहीं होता है, बल्कि इसे सीखना पड़ता है। यह बात राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविंद कुमार शुक्ला ने एग्रीकल्चर कॉलेज में फ्रूट एवं वेजिटेबल प्रोसेसिंग यूनिट का उद्घाटन करते हुए कहीं।

उन्होंने कहा कि स्किल डेवलपमेंट आपको सफल उद्यमी बनाता है, इसलिए विद्यार्थी पढ़ाई के साथ हुनर भी सीखें। विगत दिवस राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) मुख्यालय मुंबई के मुख्य महाप्रबंधक पार्थो साहा व नाबार्ड मध्य प्रदेश क्षेत्रीय कार्यालय से मुख्य महाप्रबंधक सी सरस्वती की उपस्थिति में फूड एवं वेजिटेबल प्रोसेसिंग यूनिट का शुभारंभ किया गया। इस मौके पर पर विश्वविद्यालय के डायरेक्टर एक्सटेंशन डॉ. वाय.पी. सिंह, कॉलेज के डीन डॉ. एसएस तोमर, इक्यूवेशन सेंटर के नोडल अधिकारी डॉ. वाय.डी. मिश्रा आदि मौजूद रहे।

प्लांट में छात्र सीखेंगे प्रोडक्ट तैयार करना- इक्यूवेशन सेंटर के नोडल डॉ. वाय डी मिश्रा ने बताया कि प्रोसेसिंग यूनिट काफी समय से बंद पड़ी थी जिसे पुन: तैयार कराया गया जिसे संचालित रखने का अनुबंध डॉ. वीपी सिंह राणा से किया गया है। इस यूनिट में मौसमी फलों के जूस तैयार किया जाएगा, इस कार्य में विद्यार्थियों की मदद ली जाएगी। श्री राणा का कहना है कि फल व सब्जियों को प्रोसेस करके उन्हें लंबे समय तक सुरक्षित और स्वस्थ रखा जा सकता है। फल व सब्जियों को प्रोसेस पेय पदार्थ तैयार किया जाएगा, जिसमें किसी भी तरह के रसायन की प्रयोग नहीं होगा जो पूरी तरह से शुद्ध होगा।

ड्रोन से छिड़काव का प्रदर्शन किया- इस मौके पर कॉलेज में स्थित खेतों में ड्रोन से फसल पर कीटनाशक और उर्वरक छिड़काव प्रदर्शन किया गया। जिसकी सराहना नाबार्ड से आये दल ने की। इसके साथ ही इंटरपेन्योर के साथ बैठक की और उनके अनुभव को जाना तथा उन्हें व्यवसाय को किस तरह से आगे बढ़ाया जाए इसके बारे में बताया।

माटी की आत्मा है पराली : डॉ. बघेल

कृषि वैज्ञानिकों ने पराली प्रबंधन के लिये कृषकों को दी तकनीकी सलाह

सिवनी। कृषि विज्ञान केंद्र सिवनी में कृषकों हेतु एक दिवसीय फसल अवशेषों के बेहतर प्रबंधन का प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ। इसमें ग्राम कटंगी, खैरांजी, महाराजपुर, आमगांव, सिंघोडी आदि ग्रामों के 50 से अधिक महिला व पुरूष कृषकों ने भाग लिया।

केन्द्र के वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. शेखर सिंह बघेल ने अन्नदाता किसानों से अपील की है कि पराली माटी के लिए सोना है क्योंकि फसल अवशेषों के बेहतर प्रबंधन से ही वसुंधरा के स्वास्थ्य को गुणवत्ता युक्त बनाय रख सकते हैं। फसलों के अवशेष को कृषि यंत्रों के माध्यम से मिट्टी में मिला सकते हैं। इसके लिए मल्चर, रिवर्सिबल फ्लो, रोटावेटर का उपयोग किया जा सकता है। किसान भाई स्ट्रा चोपर, हे रैक, पैडी राउण्ड बेलर, रीपर कम बाईडर एवं स्ट्रा बेलर का प्रयोग करके फसल अवशेषों की गांठें या बंडल बनाकर अतिरिक्त आमदनी भी प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही हमारे किसान भाई सुपर एसएमएस के द्वारा फसल अवशेषों को भूसा के रूप में परिवर्तित कर पशुओं के आहार के लिए तैयार कर रख सकते हैं। इसके अलावा कृषक जीरो टिलेज और सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल, हैप्पी सीडर द्वारा बुवाई कर फसल अवशेष का कारगर प्रबंधन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों को एक स्थान पर एकत्र कर जवाहर जैव विघटक का प्रयोग कर गुणवत्ता से पूर्ण बेहतरीन खाद बनाकर जैविक एवं प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हो सकते हैं क्योंकि भूमि में उपस्थित असंख्य सूक्ष्मजीवों का भोजन यह फसल अवशेष (कार्बन)है। इनका सही एवं बेहतर प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति व स्वास्थ्य को सुधार कर सकते हैं। पर्यावरण प्रदूषण कम करने के साथ ही पौधों के लिए प्राकृतिक रूप से पोषक तत्वों की उपलब्धता को बढ़ाया जा सकता है।

कृषि विज्ञान केंद्र सिवनी के प्रमुख डॉ. शेखर सिंह बघेल, डॉ के के देशमुख वैज्ञानिक, डॉ. निखिल सिंह वैज्ञानिक द्वारा कृषकों को पराली प्रबंधन की तकनीकी जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान में गेहूं व चना फसलों की कटाई का कार्य प्रारंभ है। ऐसे समय में कृषक भाई पराली को समस्या मान कर जला देते हैं, परिणाम स्वरुप जन-धन मित्र कीट, जैवविविधता, उत्पादन में कमी एवं पर्यावरण को भारी नुकसान होता है।

बल्बीय फसलों की खेती पर प्रशिक्षण

रतलाम। कृषि विज्ञान केंद्र जावरा रतलाम की उद्यानकी इकाई द्वारा रूरल यूथ के तहत बांजना के महिला एवं पुरुष कृषकों को उच्च तकनीक आधारित बल्बीय फसलों की खेती विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। उन्नत कृषकों को जायद एवं रबी के मौसम में इन फसलों की खेती करने का प्रशिक्षण दिया गया जिससे कृषक अपनी आय को दोगुना कर सकते हैं।

प्रशिक्षण के नोडल अधिकारी डॉ. रोहताश सिंह भदौरिया द्वारा किसानों को वर्षा ऋतु में प्याज की पौध के लिये नर्सरी तैयार करने, बीज उपचार करने एवं समय-समय पर खादों का प्रयोग करने की जानकारी दी। कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस. त्रिपाठी द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र में की जाने वाली गतिविधि, डॉ. बरखा शर्मा द्वारा बल्ब फसल उत्पाद के बारे मे जानकारी दी गयी। डॉ. सी.आर. कांटवा द्वारा सिंचाई करने के तरीके एवं बीज उपचार से संबंधित जानकारी दी।

डॉ. रामधन घसवा द्वारा कृषि एप, डॉ. सुशील कुमार द्वारा पशु खाद प्रबंधन, डॉ. ज्ञानेंद्र तिवारी द्वारा कीट एवं रोग, डॉ. शिश राम जाखड़ द्वारा मिट्टी जांच, पोषक तत्व प्रबंधन के बारे में जानकारी प्रदान की। उक्त कार्यक्रम में निकरा सहायक आदित्य प्रताप सिंह राठौर द्वारा जलवायु परिवर्तन पर किसानों को जानकारी उपलब्ध कराई गई। उक्त प्रशिक्षण में 12 महिला एवं 12 पुरुष कृषकों की उपस्थिति रही।

छात्र व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण

रीवा। कृषि महाविद्यालय रीवा में अनुसूचित जनजाति उपयोजना, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा छात्र एवं छात्राओं के लिए व्यक्तित्व विकास वित्त पोषित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. धीरेन्द्र खरे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। श्री खरे ने कहा कि रीवा और उत्साही छात्रों के साथ जुड़ना वास्तव में एक सुखद और समृद्ध अनुभव था। छात्रों की सक्रिय भागीदारी और गहरी जिज्ञासा से चिह्नित शिक्षा पर व्यावहारिक चर्चा ने बातचीत को अविस्मरणीय बना दिया। कृषि महाविद्यालय, रीवा के डीन डॉ. सनत त्रिपाठी को यह अवसर प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। सभी छात्रों और संकाय सदस्य उत्कृष्टता के लिए प्रयास करते रहें और अपनी शैक्षणिक और व्यावसायिक यात्रा में महान ऊंचाइयों को प्राप्त करें। इस अवसर पर विश्वविद्यालय से आए विशिष्ट अतिथि डॉ. संजीव कुमार ने छात्रों एवं छात्राओं का मार्गदर्शन किया। मुख्य अतिथि ने महाविद्यालय में चल रही परीक्षाओं का निरीक्षण कर मार्गदर्शन दिया एवं विभिन्न विभागों एवं इकाइयों का भ्रमण किया। इस अवसर पर डॉ. बी.एम. मौर्य, डॉ. आर.के. तिवारी, डॉ. आर.पी. जोशी, डॉ. वी.के. सिंह, डॉ. एस.एम. कुर्मवंशी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रदीप मिश्रा ने किया।

फार्मर रजिस्ट्री के लिए शिविरों का आयोजन

नर्मदापुरम। जिले में फार्मर रजिस्ट्री एवं ई-केवाईसी कार्य को प्राथमिकता से पूर्ण करने के लिए कलेक्टर सोनिया मीना के निर्देशानुसार विशेष शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इन शिविरों के माध्यम से किसानों का पंजीयन एवं ई-केवाईसी सुनिश्चित किया जा रहा है, जिससे वे विभिन्न कृषि लाभ योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सकें।

जिले के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में राजस्व अमले द्वारा घर-घर जाकर किसानों को योजना की जानकारी दी जा रही है एवं उनके फार्मर रजिस्ट्री हेतु सहायता प्रदान की जा रही है। साथ ही विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर शिविर लगाकर किसानों को फार्मर रजिस्ट्री की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।

रात्रि के समय सर्वर की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए भी पंजीयन कार्य किया जा रहा है, जिससे अधिक से अधिक किसानों का पंजीयन हो सके। कलेक्टर सोनिया मीना के निर्देशानुसार राजस्व अधिकारियों द्वारा समय-समय पर इन शिविरों का निरीक्षण कर फार्मर रजिस्ट्री प्रक्रिया की प्रगति की समीक्षा की जा रही है। प्रशासन द्वारा सभी किसानों से अपील की गई है कि वे निकटतम शिविर में जाकर शीघ्र अपना पंजीयन एवं ई-केवाईसी पूर्ण कराएं, जिससे वे शासकीय योजनाओं का लाभ उठा सकें।

(पृष्ठ 10 का शेष)

भेड़ बकरी एवं शूकर....

बाड़े में पानी आहार व प्रकाश की व्यवस्था अवश्य की जानी चाहिए।

ब्याने वाली या प्रसूता शूकरी का बाड़ा :- इन पशुओं के लिए एक छत के नीचे 40 से अधिक बाड़े नहीं बनाए जाने चाहिए तथा प्रत्येक बाड़े में एक मादा को ही रखा जाना चाहिए। इन बाड़ों की ऊंचाई 1.2 मी. होनी चाहिए। पानी व आहार के ट्रफ प्रत्येक बाड़े में होनी चाहिए।

वीनर शूकर शावकों का बाड़ा :- एक छत के नीचे इन पशुओं के लिए अधिकाधिक 30 बाड़े बनाए जाते हैं तथा प्रत्येक बाड़े में 10-20 शूकर शावक रखे जाते हैं। इनके

अलावा वजन लेने का कक्ष भंडार, खाद का गड्ढा तथा गर्म दोनों में शूकर हेतु वेलोइग टैक का निर्माण जरूरी होता है। यह टैफ कम से कम 2.5×1.2×0.15 मी. आकार की सीमेन्ट कांक्रीट से बनाया जाना चाहिए इसके ऊपर पानी छिड़काव की व्यवस्था होनी चाहिए ताकि लू से पशुओं का बचाव किया जा सके।

आवासों की बनावट :-

शूकर बाड़ों की फर्म सीमेन्ट क्रांकीट या ईंट सीमेन्ट से बनानी चाहिए। फर्श की ऊपरी सतह खुरदरी बनाई जाती है। ताकि पशुओं को फिसलने से बचाया जा सके। बाड़ों की ऊंचाई 2-2.5 मी. होनी चाहिए तथा बड़ी दीवार के ऊपरी छोर 0.5 मी. नीचे निश्चित ऊंचाई पर झरोखता (1.0 मी. लंबे×0.6 मी. ऊंचे) बनाए जाने चाहिए आवश्यकता अनुसार छत समकोण या त्रिकोणी बनाई जा सकती है। प्रत्येक बाड़े में 1.2-1.5 मी. ऊंचे व 0.75-1 मी. चौड़े दरवाजे दिए जाते हैं। दरवाजे व झरोखों पर बाहर की और मच्छर प्रूफ जाली लगानी चाहिए। प्रत्येक बाड़े में एक जाली 25 से.मी. चौड़ी तथा उसमें 2.5 से.मी. का ढाल देते हुए 10 मी. लम्बी आवश्यक बनानी चाहिए।

(पृष्ठ 7 का शेष)

तरबूज की वैज्ञानिक...

पके फले को थपथपाने से धबधब की आवाज आती है तो फल पका होता है। इसके अलावा यदि फल से लगी हुई प्ररोह पूरी तरह सूख जाय तो फल पका होता है। फलों को तोड़कर ठण्डे स्थान पर एकत्र करना चाहिए। दूर के बाजारों में फल को भेजते समय कई सतहों में ट्रक में रखते हैं और प्रत्येक सतह के बाद धान की पुआल रखते हैं। इससे फल आपस में रगड़कर नष्ट नहीं होते हैं और तरबूजों की ताजगी बनी रहती है। गर्मी के दिनों में सामान्य तापमान पर फल को 10 दिनों तक आसानी से रखा जा सकता है। औसतन तरबूज की उपज 400-500 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

प्रमुख कीट एवं नियंत्रण

कद्दू का लाल कीट (रेड पम्पकिन बिटिल) इसकी सूण्डी व वयस्क दोनों क्षति पहुँचाते हैं। प्रौढ़ पौधों की छोटी पत्तियों पर ज्यादा क्षति पहुँचाते हैं। ग्रब (इल्ली) जमीन में रहती है जो पौधों की जड़ पर आक्रमण कर हानि पहुँचाती है। फसलों के बीज पत्र एवं 4-5 पत्ती अवस्था इन कीटों के आक्रमण के लिए सबसे अनुकूल है। प्रौढ़ कीट विशेषकर मुलायम पत्तियां अधिक पसन्द करते है। अधिक आक्रमण होने से पौधे पत्ती रहित हो जाते है।

नियंत्रण: सुबह ओस पड़ने के समय राख का बुरकाव करने सेभी प्रौढ़ पौधा पर नहीं बैठता जिससे नुकसान कम होता है। इस कीट का अधिक प्रकोप होने पर कीटनाशी जैसे डाईक्लोरोवास 76 ईसी, 1.25 मिली प्रति लीटर या ट्राइक्लोफेरान 50 ईसी, 1 मिली प्रति ली. की दर से 10 दिनों के अन्तराल पर पर्णीय छिड़काव करें।

एफिड्स/माहू: पौधों की पत्तियों और तनों के नीचे छोटे मुलायम शरीर वाले कीटय आमतौर पर हरे या पीले रंग के, लेकिन प्रजाति और मेजबान पौधे के आधार पर गुलाबी, भूरे, लाल या काले भी हो सकते हैं। यदि एफिड का संक्रमण भारी है तो इससे पत्तियां पीली हो सकती हैं और पत्तियों पर विकृत, परिगलित धब्बे और या बौने अंकुर हो सकते हैं। एफिड्स हनीड्यू नामक चिपचिपा, शर्करायुक्त पदार्थ स्रावित करते हैं जो पौधों पर कालिख जैसी फफूंदी के विकास को प्रोत्साहित करता है।

नियंत्रण: चिपचिपे जाल (लाइट ट्रैप) 4 से 6 प्रति एकड़ खेत में लगाएं। प्रभावित पौधों को हटाएं और खेत में संतुलित नमी बनाए रखें। इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल. को 90-120 मिली प्रति एकड़ खेत में छिड़काव करें। प्रोफेनोफोस 40 प्रतिशत + साइपरमेथ्रिन 4 प्रतिशत ई सी मिलीलीटर प्रति लीटर पानी, डिनोटेफ्यूरान 20 प्रतिशत एसजी 80 ग्राम प्रति एकड़ स्प्रे करें।

प्रमुख रोग एवं नियंत्रण

मृदुरोमिल आसिता: जब तापमान 20-22 डिग्री से.ग्रे. हो, तब यह रोग तेजी से फैलता है। उत्तरी भारत में इस रोग का प्रकोप अधिक है। इस रोग का मुख्य लक्षण पत्तियों पर कोणीय धब्बे जो शिराओं द्वारा होते हैं। अधिक आर्द्रता होने पर पत्ती के निचली सतह पर मृदुरोमिल कवक की वृद्धि दिखाई देती है।

नियंत्रण: इसकी रोकथाम के लिए मैंकोजेब 0.20 प्रतिशत (2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी) घोल से पहले सुरक्षा के रूप में छिड़काव बीमारी दिखने तुरन्त करना चाहिए। यदि पौधों पर बीमारी के लक्षण दिखाई दे रहे हो तो मेटल एक्सिल 8 प्रतिशत+ मैन्कोजेब 64 प्रतिशत डब्ल्यू.वी.पी. (25 प्रतिशत) दवा का छिड़काव 7 दिन के अन्तराल पर 3-4 बार करना चाहिए। पूरी तरह रोगग्रस्त लताओं को निकाल कर जला देना चाहिए तथा बीज उत्पादन के लिए गर्मी की फसल से बीज उत्पादन करें।

तरबूज बड नेक्रोसिस: यह रोग रस द्रव्य एवं थ्रिप्स कीट द्वारा फैलता है। रोग ग्रस्त पौधों में क्राउन से अत्यधिक कल्ले निकलते हैं और तना सामान्य से कड़ा और ऊपर उठा हुआ दिखाई देता है, पत्तियां विकृत हो जाती हैं उसमें असामान्य वृद्धि होती है तथा फूल भी टेढ़े-मेढ़े एवं हरे हो जाते हैं।

नियंत्रण: इस रोग से बचाव हेतु रोग रोधी किस्म की बुवाई करें तथा रोगी पौधों का उखाड़कर नष्ट कर देवें। बीज अथवा पौधों को इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मिली दवा 1 लीटर पानी में घोलकर रोपाई अथवा बुआई से पहले 10 मिनट तक उपचारित करें। पौध जमाव के 10-15 दिन के बाद से नीम अथवा पुंगगामिया के रस का छिड़काव 3 प्रतिशत की दर से 15 दिन के अन्तराल पर करना चाहिए।

एन्थ्रेक्नोज: एन्थ्रेक्नोज एक फफूंद जनित रोग है जो तरबूज की फसल को काफी नुकसान पहुंचा सकता है। यह रोग फलों, पत्तियों और तनों को प्रभावित करता है। इस रोग में फलों, पत्तियों और तनों पर भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। धब्बे बढ़कर बड़े हो जाते हैं और फलों में सड़न पैदा कर देते हैं।

नियंत्रण: यह रोग फफूंद से फैलता है एवं रोग फैलने के लिए उच्च आर्द्रता और 25-30 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल होता है। इसके नियंत्रण के लिए प्रोपीकोनाजोल 25 प्रतिशत ईसी का 200-300 मिली प्रति एकड़ या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. का 2 ग्राम प्रति लीटर की मात्रा में छिड़काव करें।

विदिशा जिले में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।
श्री कृष्णकांत सिंघारिया
श्रीराम नगर, पशु चिकित्सा के सामने गली नं. 4, विदिशा जिला-विदिशा (म.प्र.)
मो. 8120303100

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत
एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

बुढार में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।
रामलला कुशवाहा
मे. कुशवाहा बीज भंडार स्टेशन के पास, बुढ़ार जिला-शहडोल (म.प्र.)
मो. 9424339752

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
●औषधीय●वन ●सब्जी●फूल●बीज●स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ●कीटनाशक ●जैविक खाद ● गार्डन टूल ●जैविक उत्पाद ●ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।
वितरक - ●निर्मल सीड्स, जलगांव ●कलश सीड्स, जालाना ●अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ●दिनाकर सीड्स, गुजरात ●सटिंड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ●स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ●जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ●स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ●अनु प्रोडक्ट्स लि. ●श्री सिद्धि एग्रो केम
112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

अर्जुन इण्डस्ट्रीज
AN ISO 9001:2015 QMS CERTIFIED INDUSTRIES
समस्त कृषि यंत्रों के निर्माता एवं विक्रेता
● ट्राली ● टेंकर ● कल्टीवेटर ● बोनी मशीन ● पल्टीप्लाऊ

लाम्बाखेड़ा ओवरब्रिज, बायपास चौराहा, बैरसिया रोड, भोपाल (म.प्र.)
मो. 9826097991, 9826015664, 9981415744

विश्व जल दिवस जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

जबलपुर। विश्व जल दिवस के अवसर पर जबलपुर जिले के कुंडम ब्लाक के टिकारिया गांव में जल संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम एसबीआई फाउंडेशन के सहयोग से लोक कल्याण भूमिका समिति द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य जल संरक्षण और जल संसाधनों के सतत प्रबंधन के महत्व के बारे में जागरूक करना है। कार्यक्रम के दौरान समुदाय के सदस्यों को जल संरक्षण के महत्व और इसके कृषि एवं आजीविका पर प्रभाव के बारे में जानकारी दी गई। यह पहल एसबीआई ग्राम सक्षम कार्यक्रम का हिस्सा है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में वाटरशेड विकास और सतत जल प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

एसबीआई फाउंडेशन के प्रबंध निदेशक संजय प्रकाश के मार्गदर्शन में ग्राम सक्षम पहल ने क्षेत्र में जल सुरक्षा को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस अवसर पर अपने विचार साझा करते हुए श्री प्रकाश ने कहा कि जल मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण घटक है, विशेष रूप से कृषि प्रधान समुदायों के लिए। वाटरशेड विकास और सतत जल प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ावा देना हमारे ग्राम सक्षम कार्यक्रम के प्रमुख फोकस क्षेत्रों में शामिल है। हमें यह देखकर खुशी हो रही है कि जबलपुर जिले में लोक कल्याण भूमिका समिति के साथ हमारी साझेदारी के माध्यम से किए गए प्रयास सकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं और हमें विश्वास है कि स्थानीय समुदाय भविष्य में इन पहलों की जिम्मेदारी को अपनाएंगे।

एसबीआई फाउंडेशन के वितीय सहयोग से लोक कल्याण भूमिका समिति द्वारा खेत तालाब का निर्माण करवाया जा रहा है, जिससे सिंचाई और पशुपालन के लिए जल उपलब्धता में सुधार होगा और गांव का पानी गांव में रहेगा। स्थानीय किसानों और समुदाय के सदस्यों ने इस पहल की सराहना की और जल संरक्षण की सतत प्रथाओं को अपनाने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। यह पहल एसबीआई फाउंडेशन की ग्रामीण विकास और पर्यावरणीय स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता को दोहराती है, जिससे स्थानीय समुदायों को जल संसाधन प्रबंधन में सक्रिय भागीदार बनने के लिए सशक्त बनाया जा सके।

पंचगव्य निर्माण एवं उपयोग का तकनीकी प्रशिक्षण

कटनी। प्रधानमंत्री कॉलेज आफ एक्सीलेंस शासकीय तिलक स्नातकोत्तर महाविद्यालय कटनी में उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश शासन द्वारा व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत शिक्षा के साथ स्वरोजगार स्थापित करने के लिए विद्यार्थियों को प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बाजपेई के मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. व्ही.के. द्विवेदी के सहयोग से जैविक कृषि विशेषज्ञ रामसुख दुबे द्वारा स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को जैविक खेती का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

श्री दुबे ने विद्यार्थियों को बताया कि पंचगव्य बनाने के लिए देसी गाय का गोबर 5 किलोग्राम, गोमूत्र 3 लीटर, दूध 2 लीटर, दही 2 लीटर, घी 500 ग्राम, गुड़ 500 ग्राम एवं 12 पके हुए केले को एक प्लास्टिक के ड्रम में 18 दिन तक रखकर दिन में दो बार डंडे से हिलाते हैं। इसके तीन प्रतिशत घोल से बीज एवं जड़ तथा कंद उपचार फल, पेड़ एवं पौधों तथा फसल पर छिड़काव, बीज भंडारण एवं सिंचाई पानी के साथ खेत में प्रवाहित करके फसल उत्पादन में वृद्धि के लिए उपयोग करते हैं। इसे खाद बीमारियों से रोकथाम कीटनाशक के रूप में एवं वृद्धि कारक उत्प्रेरक के रूप में उपयोग कर सकते हैं। इसे एक बार बनाकर 6 माह तक उपयोग कर सकते हैं। पंचगव्य के उपयोग से भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि भूमि की उर्वरा शक्ति में सुधार फसल उत्पादन एवं उसकी गुणवत्ता में वृद्धि, भूमि में हवा एवं नमी को बनाए रखना, फसल में कीट एवं रोग का प्रभाव कम करना तथा सरल एवं सस्ती तकनीक आदि के पंचगव्य से फायदे हैं।

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख मासिकपत्र

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें

कृषक दूत
मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16, ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्यता फार्म

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख मासिकपत्र

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम.....
संस्था का नाम.....
पूरा पता.....
ग्राम.....पोस्ट.....तहसील .....
जिला.....राज्य.....पिन कोड
दूरभाष/कार्या. ..... घर ..... मोबा. : .....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र '' कृषक दूत'' की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में).....(शब्दों में).....
बैंक का नाम..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक.....
दिनांक..... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान..... प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर सदस्य
दिनांक..... एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

बालाजी फॉस्फेट्स आईपीओ की सफलता ने किया कंपनी की विकास यात्रा के नए अध्याय का शुभारंभ

इंदौर। बालाजी फॉस्फेट्स लिमिटेड ने अपने सफल आईपीओ का जश्न इंदौर स्थित मैरियट होटल में एक भव्य समारोह के साथ मनाया। इस सफलता के साथ कंपनी विकास के नए चरण की ओर अग्रसर हो गई है। कार्यक्रम की शुरुआत पारंपरिक दीप प्रज्वलन से हुई, जिसमें विशिष्ट अतिथियों अश्विन जोशी (पूर्व विधायक, इंदौर), प्रदीप निखरा (पूर्व एमडी, एपेक्स बैंक), डॉ. विमल प्रकाश शर्मा (ख्यात ज्योतिष), महेंद्र दीक्षित (सचिव, मार्कफेड और प्रबंध निदेशक, मध्य प्रदेश बीज निगम) और वी.के. बॉथम (सेवानिवृत्त आईएएस) ने भाग लिया। 1.20 गुना सब्सक्रिप्शन प्राप्त करके 80.05 रुपए पर बंद हुए इस आईपीओ की सफलता की नींव में कंपनी के स्थिर और प्रभावी प्रदर्शन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आईपीओ से जुटाई गई धनराशि को रणनीतिक रूप से विस्तार के लिए आवंटित किया गया है। इसके साथ ही बालाजी फॉस्फेट्स उद्योग में नए आयाम स्थापित करने और इंदौर को वित्तीय बाजारों में और मजबूती दिलाने के लिए तैयार है।

प्रवर्तकों मोहित एरन और आलोक गुप्ता ने बताया कि बालाजी फॉस्फेट्स लिमिटेड का आईपीओ 28 फरवरी से 4 मार्च तक खुला था, जिसे 1.20 गुना सब्सक्रिप्शन प्राप्त हुआ। शेयर की लिस्टिंग रुपये 75 प्रति शेयर पर हुई, जिससे 7.14 प्रतिशत का लिस्टिंग लाभ मिला, और यह 26 मार्च तक 35 प्रतिशत बढ़कर रुपये 94.50 पर बंद हुआ। उन्होंने इस अवसर पर आईपीओ को मिली जबरदस्त प्रतिक्रिया के लिए सभी का आभार व्यक्त किया और बाजार की अस्थिरता के बावजूद कंपनी की सफलता को इसकी दृढ़ता का परिणाम बताया। सीए महेंद्र जैन, पूर्व वैधानिक लेखा परीक्षक ने बालाजी फॉस्फेट्स की प्रेरणादायक यात्रा पर प्रकाश डाला, जबकि अशोक जैन, चेयरमैन, अरिहंत कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड (आईपीओ के प्रमुख प्रबंधक) ने कंपनी के उज्ज्वल भविष्य पर अपना भरोसा जताया।

कार्यक्रम के दौरान एक विजन वीडियो प्रस्तुत किया गया, जिसने लिस्टिंग बेल सेरेमनी के लिए मंच तैयार किया वो माहौल में ऊर्जा भर दी। बालाजी फॉस्फेट्स के शेयर बाजार में प्रवेश के प्रतीक स्वरूप पूरी टीम और उनके परिवारों ने मिलकर घंटी बजाई। इस ऐतिहासिक क्षण पर आयोजन स्थल देर तक तालियों की ध्वनि से गूंजता रहा। प्रवर्तकों ने एक विशेष वीडियो संदेश के माध्यम से निवेशकों को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद दिया।

समारोह में केक कटिंग भी हुई, जिसके बाद आईपीओ में अहम योगदान देने वाले लोगों का सम्मान किया गया। कंपनी ने अपनी कृषि जड़ों को दर्शाते हुए सम्मानित व्यक्तियों को एक लिली पौधा और स्मृति चिन्ह भेंट किए। सम्मानित लोगों में सीए महेंद्र कुमार जैन, अशोक जैन (अरिहंत कैपिटल), निकुंज मित्तल (एनएनएम सिक्योरिटीज), सीएस आशीष करोडिया, अशुतोष जी (एनएनएम नेक्स्टजेन एडवाइजरी), सीए विष्णु सिंह सुनेर, सीए अमोल क्षीरसागर (अरिहंत कैपिटल), सीए मनीष रावल, सीएस शुभांगी चौरसिया, और संजय बैरागी शामिल थे।

समारोह का समापन एक संगीतमय प्रस्तुति और भव्य रात्रिभोज के साथ हुआ, जहां उपस्थित मेहमानों ने जश्न को उल्लासपूर्वक मनाया। यह आयोजन बालाजी फॉस्फेट्स की नवाचार और विकास के लिए प्रतिबद्धता को दर्शाता है। साथ ही उन सभी व्यवसायों के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो प्रायमरी मार्केट के अवसरों को तलाश रहे हैं।

किसानों की सेवा में समर्पित पंकज बीज भंडार

राधेश्याम मेवाड़ा

पंकज मेवाड़ा

(उमाशंकर तिवारी)

सीहोर। बीज एवं पेस्टीसाइड्स के विक्रेता पंकज बीज भंडार के संचालक राधेश्याम मेवाड़ा ने बताया कि 14 वर्षों से लगातार किसानों की सेवा में समर्पित हैं।

श्री मेवाड़ा द्वारा उच्च गुणवत्ता युक्त बीज, पेस्टीसाइड्स उपलब्ध कराना उनकी पहली प्राथमिकता है। सरल स्वभाव के पंकज मेवाड़ा ने बताया कि दूर दराज तक के किसान हमारे इस संस्थान के माध्यम से जुड़े हैं। उन्होंने बताया कि उच्च गुणवत्ता युक्त बीज उपलब्ध कराना अपना कर्तव्य समझते हैं। श्री मेवाड़ा ने बताया कि आसपास के लगभग 5000 किसानों से ज्यादा सीधा संपर्क हैं। पंकज बीज भंडार द्वारा जो भी कंपनी का उत्पाद विक्रय करते हैं उस कंपनी के अधिकारियों द्वारा उसका उपयोग करना एवं समय-समय पर बीमारियों का निरीक्षण कराना पहली प्राथमिकता हैं। श्री मेवाड़ा द्वारा सोयाबीन की नई-नई प्रजातियां जेएस 2303, जेएस एनआरसी की 150, एनआरसी 142, जेएम 2172, 2117, 2216, आरबीएस-24 के अलावा जेएस 2218, 2212, 1569 बीएम के अलावा अन्य बीज हेतु मोबाइल नं. 9826986154 पर संपर्क कर सकते हैं।

श्री पंकज मेवाड़ा हमेशा किसानों को समझाईश देते हैं कि पेस्टीसाइड्स का उपयोग कम कर जैविक खाद का उपयोग करें ताकि अच्छा उत्पादन के साथ-साथ मुनाफा भी कमाया जा सके। पंकज बीज भंडार के संचालक हमेशा किसानों को उचित सलाह देते हैं।

अंतर महाविद्यालयीन खेलकूद प्रतियोगितायें आयोजित

ग्वालियर। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय की अंतर महाविद्यालयीन खेल कूद प्रतियोगिताओं का शुभारंभ कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर में हुआ, जिसमें विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर, सीहोर, खंडवा एवं उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर के लगभग 200 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

समारोह के मुख्य अतिथि कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर के निदेशक शिक्षण डॉ. वाय.पी. सिंह ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय आपका ही है। आप इस प्रतियोगिता में किस प्रकार से अपना अनुशासन, एकाग्रता एवं जिज्ञासा की भावना का परिचय देंगे, वह दर्शनीय होगा। आप सभी महाविद्यालयों को मिलजुलकर एकता के साथ खेल भावना रखनी चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर के अधिष्ठाता डॉ. एस.एस. तोमर ने कहा कि खेलकूद हमारे जीवन का अभिन्न अंग है।

नैनो उर्वरक उपयोग आधारित फसल संगोष्ठी का आयोजन

बैतूल। इफको द्वारा बैतूल जिले के ग्राम घोड़ाडोंगरी में नैनो उर्वरक उपयोग आधारित फसल संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में नीता निगम मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला सहकारी केंद्रीय बैंक बैतूल, डॉ. डी.के. सोलंकी राज्य विपणन प्रबंधक, इफको मध्यप्रदेश, डॉ. आर.डी. बारपेटे, वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र, बैतूल बाजार, रामजीलाल उइके पूर्व संसदीय सचिव, आनंद महतो, सुरेश बरथे, प्रशासक, सहकारिता विभाग, नीरज ब्यवहार, शाखा प्रबंधक, जिला सहकारी केंद्रीय बैंक, घोड़ाडोंगरी एवं ज्योति शुक्ला उपस्थित रहें।

कार्यक्रम के दौरान डॉ.आर.डी. बारपेटे द्वारा सभी कृषकों को रासायनिक उर्वरकों से होने वाले नुकसानों से अवगत कराया गया। ज्योति शुक्ला द्वारा इफको नैनो उर्वरकों की उपयोगिता एवं उनके उपयोग के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की गई ।

राज्य विपणन प्रबंधक डॉ. डी.के. सोलंकी द्वारा इफको द्वारा देश स्तर पर किए जा रहे नवाचारों एवं किसान कल्याणकारी कार्यों के विषय में विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान करते हुए आधुनिक कृषि में इफको के विभिन्न उत्पादों यथा नैनो उर्वरक, जैव उर्वरक, जल विलय उर्वरक एवं अन्य उर्वरकों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

रामजी लाल उइके द्वारा रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कम करते हुए नैनों उर्वरकों के उपयोग को बढ़ाने का सभी से आग्रह किया गया। नीता निगम द्वारा समितियों को कहा गया कि वे ज्यादा से ज्यादा नैनो उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा दे व राष्ट्रीय स्तर पर सहकारिता को अलग-अलग प्रयासों से और मजबूत बनाएं। परसराम पवार समिति प्रबंधक, रानीपुर द्वारा कार्यक्रम में आये सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया।

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26 कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:- krishak_doot@yahoo.co.in
डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार
कृषक दूत
पृष्ठ क्रमांक-16
भोपाल मंगलवार 01 से 07 अप्रैल 2025

उम्मीद से
ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

60.5 HP DI 6565 AV
TREM-IV ENGINE

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार इंजन

विशेषताएं

- पावर स्टीयरिंग
- कांस्टेंट मेश गियर
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्रयल क्लच
- लिफ्ट 2000 kg
- तेल में डूबे ब्रेक
- आगे के टायर 7.5x16
- पीछे के टायर 16.9x28

दमदार ट्रैक्टर
शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- मैकेनिकल स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- व्हील बेस 1960 MM
- सिंगल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन
1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.
Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com